A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 26 अगस्त, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 348 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

पहली बात

विधानसभा चुनाव के रूबरू बेरोजगारी की हकीकत

उमेश त्रिवेदी
संपादक

9893032101

भारत की चार विधानसभाओं के चुनाव के पहले देश के मिजाज में घुली तल्खियों ने देश की सियासत को बेनूर, बेस्वाद और बदरंग बना दिया है। बहरहाल, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के चुनाव की घोषणा के बाद इंडिया-टुडे-सीवोटर के पहले सर्वे के गोल-मोल निष्कर्षों के साथ वो मुद्दे भी सामने आए हैं, जो लोगों के दिमाग में सुलग रहे हैं। सबसे ऊपर बेरोजगारी का सवाल लोगों के जहन में सुलग रहा है। नीट, अग्निवीर योजना या शासकीय भर्ती में घोटाले, एजेंसियों के दुरूपयोग जैसे सवाल भी हैं, लेकिन महंगाई एवं बेरोजगारी कसैलापन और कोफ्त पैदा करते महसूस होते हैं।

दिलचस्प यह है कि सर्वे के निष्कर्षों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी दोनो खुश हो सकते हैं। दबी जुबान में कह गया है कि प्रधानमंत्री का मुकाम स्थिर है और राहुल गांधी की लोकप्रियता उफान पर है। राहुल की मोहब्बत की दुकान चल निकली है। अभी लोकसभा चुनाव हों तो मोटे तौर पर यृथास्थिति बनी रहेगी। महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा और झारखंड के विधानसभा चुनावों के बारे में यह सर्वेक्षण में गोल-मोल बातें है। निष्कर्ष का दारोमदार आम लोगों पर छोड़ दिया सा लगता है।

सर्वे मौजूदा हालात को साफ-साफ बयां नहीं करता है। हालांकि स्थितियों को संभालने के लिए प्रधानमंत्री को कई सुझाव और चेतावनियां दी गई हैं। सर्वे में आर्थिक-विफलताओं के बीच बेरोजगारी के बढ़ते आक्रोश से खासतौर से सावधान रहने को कहा गया है।

गौरतलब है कि सियासत की जंग में बेरोजगारी के मुद्दों पर सत्तारूढ़ दल और विपक्ष की इंडिया गठबंधन आमने-सामने हैं। रोजगार की चुनौतियों का पहाड़ लांघना आसान नहीं है। रोजगार की प्राथमिकताओं पर केन्द्रित मोदी-सरकार की पांच प्रोत्साहन योजनाएं समीक्षकों के रडार पर हैं। मोदी-सरकार के बजट में रोजगार सृजन और कौशल विकास को प्राथमिकताओं में काफी ऊपर रखा गया है। यह इससे भी जाहिर होता है कि केन्द्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में रोजगार और कौशल क्रमशः 23 बार और 10 बार उच्चारित किया था। जाहिर है कि बेरोजगारी देश के सामाजिक सुरक्षा के ढांचे पर मंडरा रहा सबसे बड़ा खतरा है। 29 वर्ष की औसत आयु के साथ 144 करोड़ लोगों की आबादी का बोझ सामाजिक अराजकता के खतरों को रेखांकित करने के लिए पर्याप्त है।

बेरोजगारी की चिंताओं को दुरूस्त करने के लिए अगले पांच सालों में 2 लाख करोड़ रूपए का प्रावधान है। देश के 4 करोड़ 10 लाख युवकों के कौशल विकास के लिए यह राशि खर्च की जाने वाली है। भारतीय श्रम-बाजार की सबसे बड़ी त्रासदी अकुशल श्रमिक है। भारतीय शिक्षा की दुरावस्था का अनुमान इससे लग सकता है कि कालेज से शिक्षा के बाद निकलने वाले दो युवकों में एक किसी ऱोजगार के काबिल नही होता है। सॉफ्ट स्किल्स और तकनीकी कौशल मौजूदा आर्थिकी को मजबूत करने का सबसे बड़ा औजार है। गौरतलब है कि आम बजट में एक करोड़ युवाओं को पांच साल के भीतर देश की पांच सौ शीर्ष कंपनियों मे इंटर्न बनाने का ऐलान किया गया था। मोदी-सरकार शीर्ष कंपनियों के योजनाकारों के साथ इस घोषणा को क्रियान्वित करने के लिए रोड मैप बनाने वाली थी। फिलहाल यह एक्सरसाइज निष्फल होती दिख रही है। शीर्ष कंपनियों के कर्ताधर्ताओं ने इस मामले में हाथ ऊंचे कर दिये हैं। उनका कहना है कि इस योजना को सिर्फ पांच सौ शीर्ष कंपनियों तक ही सीमित रखना मुनासिब नहीं होगा। जाहिर इन परिस्थितियों में केन्द्र सरकार को नए सिरे से इस पर विचार करना होगा।

लेकिन, यह भी तय है कि बेरोजगारी का मुद्दा आसानी से मोदी-सरकार का दामन छोड़ने वाला नहीं है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने एक ट्वीट में बेरोजगारी के लिए मोदी-सरकार को कठघरे में खड़ा किया है। मोदी-सरकार की युवा-विरोधी नीतियों के कारण देश में नौकरियों का अकाल पड़ गया है। बैंक ऑफ बड़ोदा की ताजा रिपोर्ट के हवाले से उन्होंने जानकारी दी कि सन 2022-23 में ही देश की 375 कंपनियों में 2 लाख 43 हजार नौकरियां घट गई हैं। बिहार में सिपाही की 60 हजार भर्तियों के लिए 18 लाख युवकों ने आवेदन दिया है। इसके साथ एक विडम्बना यह भी जुड़ी है कि पुलिस में सिपाहियों के इस भर्ती अभियान में एक बार पर्चा भी लीक हो चुका है। इसी प्रकार सिर्फ जुलाई महिने में ही भारत के आयटी सेक्टर में 1 लाख 24 पदों को समाप्त किया गया है।

बेरोजगारी के मामले को राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से अलग रख कर जांचना-परखना और इससे निपटना होगा। बेरोजगारी के दृश्य भयावह है। एक खबर के मुताबिक हाल ही में मुंबई में एयरपोर्ट लोडर के लिए आयोजित एयर इंडिया के वॉक-इन-इंटरव्यू में 25 हजार से ज्यादा लोग जमा हो गए थे। नौकरियों के विज्ञापनों के पीछे भागती बेरोजगार की फौजों की कहानी काफी दर्दनाक है। हालात सुधरते भी महसूस नहीं हो रहे हैं। सिटी ग्रुप की एक रिपोर्ट के मुताबिक भले ही हमारे देश की विकास दर 7 प्रतिशत से ज्यादा हो, लेकिन नौकरियों के लिहाज से भारत का अगला दशक चुनौतियों भरा रहने वाला है। फिलवक्त भारत में सालाना 1 करोड़ 20 लाख रोजगारों की जरूरत है, लेकिन हमारे पास गुंजाइश सिर्फ 80 लाख लोगों को रोजगार देने की है। इस परिप्रेक्ष्य में सत्ता और समाज में अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। बेरोजगारी की भयावह आग में राजनीतिक रोटियां सेकने के राजनीतिक करतब देश को अराजकता की ओर ढकेल सकते हैं।

चुनाव आयोग की बेचारगी...

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव नहीं करवाने का त्यौहारी-बहाना अब चुनाव आयोग के गले की हड्डी बन गया है। आयोग ने हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के साथ महाराष्ट्र-झारखंड के चुनाव की घोषणा को तीज-त्यौहार की बहुलता के कारण टाला था। त्यौहारी-मौसम के कारण महाराष्ट्र में चुनाव करवाने में आयोग खुद को असमर्थ पा रहा था। तीज-त्यौहार की आड़ में चुनाव टालना अब आयोग की गले में हड्डी बनकर अटक गया है। हरियाणा की भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव आयोग से मांग की है कि धार्मिक पर्व और छुट्टियों के कारण 1 अक्टूबर को होने वाला मतदान प्रभावित हो सकता है। इसलिए चुनाव तिथि को आगे बढ़ाया जाए। चुनाव आयोग के सामने धर्म संकट यह है कि चुनाव बढ़ाने की मांग किसी अन्य दल ने नहीं, बल्कि भाजपा ने की है...।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

मथुरा की नगर है आशिक़ी का
दम भरती है आरज़ू इसी का
हर ज़र्रा-ए-सर-ज़मीन-ए-गोकुल
दारा है जमाल-ए-दिलबरी का
बरसाना-ओ-नंद-गाँव में भी
देख आए हैं जल्वा हम किसी का
पैग़ाम-ए-हयात-ए-जावेदाँ था
हर नग़्मा-ए-कृष्ण बाँसुरी का
वो नूर-ए-सियाह या कि हसरत
सर-चश्मा फ़रोग़-ए-आगही का।

– हसरत मोहानी

हाथी-घोड़ा पालकी,जय कन्हैयालाल की...

देश भर में आज रहेगी जन्माष्टमी की धूम

सज गए मंदिर, द्वापर युग जैसा दुर्लभ संयोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश भर में कृष्ण जन्माष्टमी का त्योहार कल सोमवार को धूमधाम से मनाया जाएगा। मथुरा-वृंदावन से लेकर पूरे देश में कन्हैया के जन्मोत्सव की तैयारियां पूरी हो गई हैं। मंदिरों को बेहद आकर्षक ढंग से सजाया गया है। वैदिक पंचांग के अनुसार हर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भादो मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को पड़ती है। इस दिन भगवान श्री कृष्ण जन्मोत्सव होता है। वहीं दिन भक्त भगवान की पूजा-अर्चना कर उनके नाम का उपवास रखते हैं, रात्रि के समय भगवान को स्नान आदि करा 56 भोग का प्रसाद लगाया जाता है। वहीं इस दिन श्री कृष्ण के बाल स्वरूप लड्डू गोपाल के रूप में उनकी मूर्ति का पूजन करना शुभ होता है। इस बार जन्माष्टमी पर बहुत ही शुभ योग बन रहे हैं। जैसे योग भगवान कृष्ण के जन्म के समय बने थे वैसे ही योग इस बार भी बन रहे हैं। बता दें कि इस बार कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व 26 अगस्त सोमवार के दिन मनाया जाएगा। जन्माष्टमी भाद्रमास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाई जाती है और यह तिथि इस बार 26 अगस्त को है। इसके अलावा 27 अगस्त को भगवान कृष्ण के जन्म की खुशी में जन्मोत्सव मनाया जाएगा। जन्माष्टमी पर हिंदू परिवार के अधिकांश घरों में व्रत रखा जाता है और कान्हाजी के जन्म की खुशियां मनाई जाती हैं। जन्माष्टमी का व्रत कैसे करें और इस दिन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इसको लेकर शास्त्रों और पुराणों में कुछ नियम बताए गए हैं। जन्माष्टमी व्रत के नियमों को मानने की शुरुआत सप्तमी तिथि से ही हो जाती है। सप्तमी तिथि से ही व्रतियों को ब्रह्मचर्य का पालन शुरू कर देना चाहिए और सात्विक आहार ग्रहण करना चाहिए।

सरकारें आती जाती रहेंगी

नारी सम्मान की रक्षा हमारा दायित्व

जलगांव में पीएम मोदी बोले-महिलाओं के खिलाफ अपराध माफी योग्य नहीं,दोषी बचने नहीं चाहिए

जलगांव (एजेंसी)। प्रधानमंत्री मोदी ने रविवार को महाराष्ट्र के जलगांव में लखपति दीदी कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने स्व-सहायता समूहों को 5 हजार करोड़ रुपए का लोन जारी किया। साथ ही 11 लाख लखपति दीदियों को सर्टिफिकेट भी दिया। प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार की तारीफ करते हुए कहा- पिछले 70 साल में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जितना काम विपक्ष के लोगों ने नहीं किया, उतना हमने 10 साल के कार्यकाल में कर दिखाया। यह सिलसिला अभी और तेजी से आगे बढ़ेगा। पीएम ने देशभर में हो रही रेप की घटनाओं पर चिंता जताई। कोलकाता में महिला डॉक्टर, बदलापुर में दो बच्चियों के यौन शोषण समेत देशभर में हो रही घटनाओं का बिना नाम लिए उन्होंने कहा- आज देश का हर राज्य अपनी बेटियों की पीड़ा और गुस्से को समझ रहा है। मैं देश के हर राजनीतिक दल और राज्य सरकार से कहूंगा कि महिलाओं के खिलाफ अपराध अक्षम्य है। दोषी कोई भी हो उसे बचना नहीं चाहिए। सरकारें आती जाती रहेंगी। नारी के सम्मान और गरिमा और उनके जीवन की रक्षा का दायित्व हमारा है।

मोदी सरकार 3 करोड़ घर बहनों के नाम पर ही रजिस्टर कराएगी

पहले महिलाओं को छोटा-मोटा लोन नहीं मिल पाता था। फिर आपके इस भाई ने संकल्प लिया कि आपकी इस मुश्किल को कम करके रहूंगा। फिर मोदी सरकार ने एक के बाद एक महिला हित में निर्णय लिए। मैं चुनौती देता हूं पिछली सरकारों के 7 दशक एक तराजू में एक तरफ रख लीजिए और दूसरी तरफ मोदी सरकार के दस साल रख दीजिए। हमने इतना काम बहन बेटियों के लिए किया जितना किसी सरकार ने नहीं किया है। हमने तय किया है महिलाओं के लिए जो घर बनाती है उनमें से ज्यादातर घर माताओं बहनों के नाम हों। अभी तक जितने घर बने हैं उनमें यही नियम अपनाया है। आगे 3 करोड़ घर बनने है, उसमें भी यही प्रक्रिया अपनाएंगे। यहां मौजूद हर बहन बेटी अच्छी तरह जानती है कि जब वो कमाने लगती है तो कैसे उसका अधिकार बढ़ जाता है। उसका सम्मान बढ़ जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों और सिद्धांतों के प्रसार के लिये

हर विकासखण्ड के एक गाँव को 'बरसाना' के रूप में किया जायेगा विकसित : सीएम डॉ. यादव

मुख्यमंत्री की उपस्थिति में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर इंदौर में हुआ देश का अपने तरह का पहला एवं अनूठा धर्ममय ऐतिहासिक कार्यक्रम

पाँच हजार से अधिक बच्चे बाल-गोपाल और माताएं मैया यशोदा के रूप में उत्साह से हुई शामिल

भोपाल/इंदौर (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के सभी विकासखण्डों में एक गाँव को चयनित कर बरसाना गाँव के रूप में विकसित किया जायेगा। इन गाँवों के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों और सिद्धांतों का प्रसार जन-जन तक पहुँचाया जायेगा। बरसाना गाँव में जहां एक ओर प्राचीन संस्कृति को पुष्पित और पल्लवित किया जायेगा वहीं दूसरी ओर जैविक खेती और दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा दिया जायेगा। इन गाँवों में विकास की नई दिशा तय की जायेगी। ग्रामीणों में मानवता, सामाजिक, सांस्कृतिक एकता के जन जागरण का प्रसार कर एक ऐसा समाज तैयार किया जायेगा, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण के आदर्श और सिद्धांत दिखाई दें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के हर एक नगरीय निकाय में गीता भवन केन्द्र भी स्थापित किये जाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज इंदौर में भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव पर 'हर बालक कृष्ण-हर माँ यशोदा' की थीम पर आयोजित देश में अपने तरह के पहले एवं अनूठे कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। इस धर्ममय एवं ऐतिहासिक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थित बाल-गोपालों और यशोदा माताओं का पुष्प-वर्षा कर अभिनंदन किया। इस अनूठे कार्यक्रम में 5 हजार से अधिक बच्चे बाल-गोपाल और इतनी ही माताएं मैया यशोदा के रूप में मौजूद थी। कार्यक्रम स्थल पूरी तरह आलौकिक अनुभूति से सराबोर था। कार्यक्रम स्थल को भगवान श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं से चित्रित कर सजाया गया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थित बाल-गोपालों को गोद में लेकर स्नेहपूर्वक दुलारा। महोत्सव में मटकी फोड़ का कार्यक्रम भी हुआ। उन्होंने बाल-गोपालों को प्रसाद के रूप में माखन-मिश्री भी खिलाई। बाल-गोपालों को कृष्ण जन्माष्टमी के उपहार भी वितरित किए गये।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र और उनसे जुड़ी लीलाओं और प्रसंगों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंनें कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र से सीख लेकर हमें उनके आदर्शों और सिद्धांतों को जीवन में आत्मसात करना चाहिये। भगवान श्रीकृष्ण कोमलता, धैर्य, करूणा और प्रेम की प्रतिमूर्ति है। वे मानव जाति की रक्षा के प्रतीक भी हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन में मानव जाति के कल्याण और धर्म की स्थापना के लिये अनेक लीलाएं भी की हैं।

कमांडर की हत्या का बदला

हिजबुल्लाह का इजरायल पर भीषण पलटवार

- 150 रॉकेट और ड्रोन हमले से कनफ्यूज हुआ आयरन डोम

तेल अवीव (एजेंसी)। लेबनान के आतंकी समूह हिजबुल्लाह ने इजरायल पर बड़ा ड्रोन और रॉकेट हमला किया है। इससे कुछ देर पहले इजरायल ने हिजबुल्लाह को निशाना बनाते हुए लेबनान में कई इलाकों पर अटैक किया था। इजरायल पर हमले के बाद लेबनानी आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह ने कहा कि उसने बेरूत में मारे गए अपने कमांडर फुआद शुकर की हत्या का बदला लिया है। हिजबुल्लाह ने कहा कि इस हमले में इजरायली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया है। हमले कहां हुए हैं इसकी घोषणा बाद में की जाएगी। हिजबुल्लाह ने कहा कि वह इजरायली सेना के बैरकों और आयरन डोम को टार्गेट कर रहा है। हिजबुल्लाह कहा कि हमला पिछले महीने बेरूत के दक्षिणी इलाके में मारे गए टॉप कमांडर फुआद शुकर की हत्या का बदला लेने का पहला चरण है। इजरायल की सेना का कहना है कि पिछले एक घंटे में हिजबुल्लाह ने इजरायल की ओर 150 से ज्यादा ड्रोन और रॉकेट लॉन्च किए हैं।

मार्च 2026 तक देश से खत्म हो जाएगा नक्सलवाद : शाह

गृहमंत्री ने कहा-रूथलेस रणनीति से वामपंथी उग्रवाद पर होगा अंतिम प्रहार, छत्तीसगढ़ में बना एक्शन प्लान

रायपुर (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद खत्म करने की बात कही है। छत्तीसगढ़ के रायपुर में शनिवार को वामपंथी उग्रवाद पर उन्होंने समीक्षा की। इसके बाद उन्होंने कहा कि, अब समय आ गया है कि वामपंथी उग्रवाद की समस्या पर एक मजबूत रणनीति के साथ रुथलेस रणनीति के साथ अंतिम प्रहार किया जाए। समीक्षा बैठक में 7 राज्यों अफसरों के साथ शाह ने करीब 4 घंटे तक बातचीत की। मीटिंग में अलग-अलग राज्यों के सीआरपीएफ, पैरा मिलिट्री फोर्स के चीफ और राज्य सरकार के सचिवों को बुलाया गया था। बैठक के बाद शाह ने कहा कि, वामपंथी उग्रवाद लोकतंत्र व्यवस्था के लिए चैलेंज है। अमित शाह ने बताया कि, आज की मीटिंग में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कुछ फैसले लिए हैं। जो लोग वामपंथी उग्रवाद के लंबे समय के प्रभाव के कारण निरक्षर रह गए हैं, उनको साक्षर बनाया जाएगा। चाहे उनकी आयु कोई भी हो।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 26 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेष

आत्माराम यादव पीव

श्रीकृष्ण हैं त्रिलोकी के अधीश्वर

कृष्ण सभी भुवनों के स्वामी है, सम्पूर्ण (अखण्ड) हैं, वे धर्म की परम गहराइयों ओर ऊंचाइयों पर होकर भी गंभीर नहीं दिखाई देते है वे जीवन से उदास, हारे हुये, भागे हुए होने के बाद भी नाचते हुए। बंशी बजाते हुए, हसते ओर गीत गाते हुए खड़े है। असल में समूचा भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया कृष्ण को मानती है किन्तु कृष्ण को समझते नहीं, आवश्यकता है उन्हे समझने की। कृष्ण शांतिवादी नहीं हैं,पर मनुष्यता पर आए संकट को टालने के लिए शांतिदूत बनकर शांति का प्रस्ताव लेकर चल पड़ते है। कृष्ण युद्धवादी नहीं हैं पर यदुध से भागे भी नहीं ओर आवश्यक हुआ तो युद्ध किया। असल में वाद का मतलब ही होता है कि दो में से हम एक को चुनते हैं। कृष्ण अ-वादी हैं। कृष्ण कहते हैं, शांति से शुभ फलित होता हो तो स्वागत है। युद्ध से शुभ फलित होता हो तो स्वागत है। कृष्ण कहते हैं जिससे मंगल-यात्रा गतिमान होती हो, जिससे धर्म विकसित होता हो, जिससे जीवन में आनंद की संभावना बढ़ती हो, तो स्वागत है।

कृष्ण जैसा या उनसे बढ़कर अन्य कोई नहीं है, इसलिए उन्हे त्रिलोकी का अधीश्वर स्वीकार किया गया है। कृष्ण अपनी राज्यलक्ष्मीके द्वारा पूर्णकाम हैं, चिरलोकपालगण भी जिनके श्रीचरणकमलों में करोड़ों-करोड़ों मस्तकों द्वारा प्रणाम करते हैं, ऐसे परिपूर्णकाम हैं- भगवान् श्रीकृष्ण। श्रीगीतामें भी इसकी पुष्टि की गयी है- विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् अर्थात् मैं, कृष्ण, अपने एक अंश से इस समस्त जगत् को धारणकर अवस्थित है। तापनी में भी ऐसा ही कहा गया है-'एकोवशी सर्वग: कृष्ण ईड्य:' अर्थात् श्रीकृष्ण एक हैं, वे सबको वशीभूत रखनेवाले, सर्वज्ञ तथा सबके पूज्य हैं। ऐसे जो ईश्वर हैं, वे हैं 'परम:' - परा अर्थात् सर्वोत्कृष्टा 'मां' लक्ष्मी-रूपा शक्तिसमूह हैं जिनके, वे हैं परमेश्वर अर्थात् सर्वश्रेष्ठ लक्ष्मी अर्थात् श्रीराधा के साथ जो सर्वदा अवस्थित हैं, वे हैं परमेश्वर श्रीकृष्ण। श्रीमद्भागवतमें कहा गया है- 'रेमे रमाभिर्निजकामसंप्लुत:' अर्थात् भगवान् कृष्णने अपनी लक्ष्मियों- श्रीमती राधिकादि गोपियोंके साथ रमण किया। और भी 'नायं श्रियोऽङ्ग उ नितान्त रते: प्रसाद:' अर्थात् गोपियोंको श्रीकृष्ण के साथ रास-विलास में जो सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह रुक्मिणी-सत्यभामादि द्वारका की राजमहिषियों, वैकुण्ठ की लक्ष्मियों तथा देवलोक की लक्ष्मियों को प्राप्त नहीं हुआ; स्वर्गकी देवियोंकी तो बात ही क्या? तापनी में- 'कृष्णो वै परमं दैवतम्' अर्थात् श्रीकृष्ण ही एकमात्र परम देवता हैं।

अनन्तर श्रीमद्भागवतमें जिन्हें परिभाषा वाक्य के रूपमें निरूपित किया गया है-'एते चांशकला: पुंस: कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' अर्थात् जितने भी भगवान के अवतार हुए हैं, उनमें से कोई परम पुरुष के अंश तथा कोई अंश के अंश-कला हैं, परन्तु श्रीकृष्ण ही स्वयं-भगवान् हैं; उन स्वयं-भगवान् श्रीकृष्ण को ही प्रस्तुत श्लोकमें 'ईश्वर: परम: परमेश्वर या सर्वेश्वरेश्वर' कहा गया है। क्योंकि दूसरे दूसरे अवतार भी ईश्वर हैं, अतएव उन सबके अवतारी श्रीकृष्ण को ही एकमात्र परमेश्वर कहा गया है। शास्त्र में ऐसा कहा गया है-जो ईश्वर समूह में परमेश्वर, देवताओं में परम देवता, समस्त प्रजापतियों में परम-पति हैं तथा जो समस्त भुवनोंके स्वामी हैं, ऐसे महान् देव श्रीकृष्णको मैं जाननेका प्रयास करता है। 'कृष्ण' शब्द-विशेष्य पद है और अवशिष्ट सभी शब्द विशेषण पद हैं। श्रीशुकदेव आदि प्रसिद्ध महाजनोंने 'कृष्णावतार महोत्सव' आदि पदों के द्वारा श्रीकृष्ण को ही सभी अवतारों के अवतारी के रूपमें प्रतिष्ठित किया है।

श्रीकृष्णा विर्भाव के समय श्रीगर्गाचार्य ने नन्दगोकुल में पहुंचकर जब उनका नामकरण किया था, तब उन्होंने कहा था- हे नन्दजी। आपके इस बालक ने पूर्व युगों में भी अवतार लिया है। सत्ययुग में शुक्लमूर्ति, त्रेतायुग में रक्तमूर्ति, कलियुगमें पीतमूर्ति और इस द्वापर में कृष्णवर्ण ग्रहणकर अवतरित हुआ है। इसलिए इस बालकका नाम कृष्ण है। और भी 'कृष्णतां गत:' अर्थात् 'कृष्णस्वरूपतां गत:' इसके द्वारा भी यही प्रतीत होता है कि जितने भी अवतार हैं, वे सभी कृष्ण-स्वरूपमें प्रवेशकर कृष्णमयता को प्राप्त हुए हैं। जैसे श्रीगर्गाचार्य ने कहा है- आसन् वर्णा स्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनु:। शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गत: ॥ बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते। गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहं वेद नो जना: ॥ अर्थात् हे नन्द महाराज! आपके पुत्र के बहुत से गुण तथा कर्म हैं। उनके अनुरूप बहुत से नाम समय-समयपर प्रकाशित होते रहेंगे। यह केवल मैं ही जानता हूँ, दूसरे नहीं। इस समय ये कृष्णरूपमें प्रकट हुए हैं, ऐसे ही ये प्रत्येक युगमें बहुतसे अवतारोंको प्रकट करते हैं। प्रारम्भ में जो शुक्ल आदि अवतार प्रकट हुए हैं, वे सभी 'इदानीं कृष्णतां गत:- कृष्ण में अन्तर्भूत होकर आये हैं अर्थात् समस्त अवतारोंका समावेश कृष्णमें हुआ है। इसलिए यहाँ कृष्णका ही कर्तृत्व है अर्थात् उन्हींकी सर्वोत्कर्षता प्रकाशित है। अत: वे सभी कृष्ण

के ही रूप हैं। 'बहूनि सन्तिं नामानि रूपाणि' से जितने नाम और रूप हैं, वे सभी कृष्णके ही नाम-रूप हैं।

'परंब्रह्म' अर्थात् अखण्ड सत्ता और अखण्ड आनन्द दोनों मिलकर परं ब्रह्म-जो सब प्रकार से सर्वश्रेष्ठ हैं, समस्त बृहद् वस्तुओंमें जो सर्व बृहत्तम हैं, उन्हींको कृष्ण कहा जाता है। यहाँ किन्तु 'कृष' धातु का आकर्षण अर्थ और 'ण' शब्द का आनन्द अर्थ होने से उसके साथ समानाधिकरण रूपमें नहीं, परन्तु हेतु हेतुमत् भाव से अभेदरूप में वर्णित हुआ है। 'आयुर्वृतम्'- अर्थात् घी ही आयु है- इस न्यायके अनुसार श्रीकृष्ण रूप सत्ता में आकर्षण की प्रचुरता है। जो बृहद् हैं तथा दूसरोंको भी बड़ा बनाते हैं, उनको परम ब्रह्म कहा जाता है। श्रुतिमें भी ऐसा ही कहा गया है- 'अथ कस्मादुच्यते ब्रह्म बृहति बृहयति च' अर्थात् ब्रह्म किसे कहते हैं? जो स्वयं बृहत् हैं तथा दूसरों को भी बृहत् बनाते हैं, वे ब्रह्म हैं। श्रुति में- 'सदेव सौम्य इदमग्रमासीत्' अर्थात् हे सौम्य ! सृष्टि से पहले एकमात्र सत्स्वरूप भगवान् ही थे। सत्स्वरूप भगवानमें पूर्ण आनन्द और पूर्ण आकर्षण दोनों हैं। सर्व आकर्षण-शक्तिविशिष्ट आनन्दात्मा 'श्रीकृष्ण' हैं वे ही 'सर्व' पद आत्माओं अर्थात् जीवात्माओंके लिए है, क्योंकि श्रीकृष्ण उनको आकर्षणकर उन्हें आनन्दित करते हैं। उसका कारण है- 'भाव' अर्थात् प्रेम। उस प्रेमानन्दमें जो सदा डूबे हुए हैं, दूसरोंको भी प्रेमानन्द में डुबोते हैं।

अतएव अपने रूप और गुणोंके द्वारा परम बृहत्तम सर्वाकर्षक आनन्दस्वरूप हैं- वे 'कृष्ण' शब्दवाच्य हैं। 'कृष्ण' शब्द देवकीनन्दन में ही पर्यवसित होता है। श्रीकृष्णका सर्व आनन्दकन्दत्व वासुदेवोपनिषद् में देखा जाता है- देवकीनन्दनो निखिलमानन्दयेत्- देवकीनन्दन कृष्ण चराचर विश्व के समस्त प्राणियों को आनन्दित करते हैं। यही आनन्द अविकारी अनन्य सिद्ध है। तत्पश्चात् श्लोक स्थित 'असौ' शब्द भी अन्यत्र संक्रमित नहीं होता है अर्थात् श्रीकृष्णके लिए ही व्यवहत हुआ है। श्रीकृष्ण के परमब्रह्म होनेका उल्लेख श्रीमद्भागवतमें स्पष्टरूपसे है- 'गूढं परं ब्रह्म मनुष्यलिङ्गम्'- श्रीकृष्ण नराकार स्वरूप में छिपे हुए परम ब्रह्म हैं। और भी- 'यन्मित्रं परमानन्दं पूर्ण ब्रह्म सनातनम् परमानन्द पूर्ण ब्रह्म, सनातन पुरुष श्रीकृष्ण जिनके मित्र हैं। विष्णु पुराणमें भी- 'यत्रावतीर्ण कृष्णाख्यं परं ब्रह्म नराकृति।' गीता में- ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम् और तापनीमें भी- योऽसी परं ब्रह्म गोपाल:।' इन शास्त्रवचनोंसे सर्वत्र श्रीकृष्णका ही परं ब्रहात्व प्रतिपादित होता है।

महाप्रलयमें कालशक्तिद्वारा चराचर विश्व विलीन हो जानेपर पृथ्वी आदि स्थूल भूतसमूह, सूक्ष्म तन्मात्रत्व प्राप्त होने पर तथा व्यक्त पदार्थसमूह अव्यक्तरूपमें विलीन होने पर शेषसंज्ञक आप ही अवशेष रहते हैं। आगे और भी 'मत्त्यों मृत्युव्यालभीत: पलायन् सर्वाल्लोकान्निर्भयं नाध्यगच्छत् इत्यादि अर्थात् इस मृत्युलोकके प्राणी मृत्युरूप महासर्पके भयसे डरकर ब्रह्मलोक आदि सभी लोकोंमें आश्रय पानेके लिए भागते हुए कहीं भी निर्भय नहीं हो पाते हैं। परन्तु ऐसे भयभीत जीव सौभाग्यवश महत् पुरुषों का संग प्राप्तकर आपकी भक्तिके प्रभावसे आपके श्रीचरणकमलोंका आश्रय पाकर संसार भयसे सदाके लिए मुक्त हो जाते हैं; मृत्यु भी उन्हें छोड़कर दूर भाग जाती है। 'एकोऽसि प्रथमम्' अर्थात् सृष्टि से पूर्व में एक (अकेला) था। ब्रह्माजीने भी कहा है- 'तदिदं ब्रह्माद्वयं शिष्यते' अर्थात् अंतमें एक अद्वयब्रह्म ही अवशेष रहता है। श्रीगीतामें भी कहा गया है- ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम् - उस ब्रह्म की भी में प्रतिष्ठा हूँ। और भी गीतामें- यस्मात् क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तम:। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथित: पुरुषोत्तम: ॥' अर्थात् में इस क्षर तत्त्वसे अतीत और अक्षर तत्त्वसे भी उत्तम है। इसीलिए जगत् में और वेदोंमें पुरुषोत्तम नामसे प्रसिद्ध है। भगवान् सदा सर्वदा पुरुष-तत्व हैं, वे स्त्री या क्लीव नहीं हैं। उनके पुरुष-तत्त्वका विचार जानने से उनमें स्त्री या क्लीवत्व का भ्रम नहीं रहता है। जितने भी विष्णुतत्त्व हैं, उन सबमें जो उत्तम हैं-उत्कृष्टतम या परम हैं, वे ही पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण हैं।

श्रीकृष्ण निखिल विश्व के अन्तर्यामि आदि पुरुष है। हे भगवान! हे श्रीकृष्ण! आप ही मूल नारायण हैं। नार-शब्दका अर्थ जीवसमूह है। अत: नार अयन-निखिल जीवोंके आश्रय, भू-अखिल लोकोंके आश्रय और साक्षी अर्थात् त्रिकालज्ञ, नारायण जिनके अंग अर्थात् विलासमूर्ति हैं, ऐसे आप अपरिच्छिन्न स्वरूप हैं। कृष्ण ब्रह्म आनन्दस्वरूप है। यदि वे आनन्दस्वरूप नहीं होते तो, दूसरा कौन प्राण धारण कर सकता था? उस आनन्द से ही सारी प्रजाएँ उत्पन्न हुई हैं। उनका कोई प्राकृत कार्य नहीं है, और न उनकी कोई प्राकृत इन्द्रियी हैं। न कोई दूसरा उनके समान है और न कोई उनसे बढ़कर ही है। उनकी नित्य और स्वाभाविकी एक पराशक्ति है। वह पराशक्ति विविध प्रकारसे प्रकाशित होती है। आपकी ही अचिन्त्यशक्ति के प्रभावसे इस विश्वकी उत्पत्ति और संहार होता है; फिर भी वह (विश्व) सत्य की भीति प्रतीत होता है। तापनी और हयशीर्ष पञ्चरात्र में भी श्रीकृष्ण के सच्चिदानन्दधन-विग्रह का प्रतिपादन किया गया है- %सच्चिदानन्दरूपाय कृष्ण या क्लिष्टकारिणे। नमो वेदान्त वेद्याय गुरवे बुद्धि साक्षिणे- अर्थात् जो सच्चिदानन्दघन-विग्रह हैं, जो वेदान्त शास्त्र के प्रतिपाद्य हैं, जो अनायास ही निरपेक्षरूपसे अखिल विश्वकी सृष्टि, स्थिति और प्रलय के सम्पादक हैं, जो भक्तोंकी अविद्या आदि पंचक्लेशों का हरण करते हैं, जो हमारे गुरु हैं अर्थात् गुरुरूप से इन सबकी बुद्धि के प्रेरक तथा साक्षी हैं ओर सच्चिदानन्द स्वरूप हैं।

जन्माष्टमी के त्यौहार के मद्देनजर इन दिनों विभिन्न विद्यालयों तथा जिनालयों में राधा-कृष्ण के वेश में बच्चों को सजा-संवार कर नाटिकाएं प्रस्तुत की जा रहीं हैं, उसी के चलते राधा रानी के रुप में अपनी विभिन्न मुद्राएं प्रस्तुत कर नृत्य में रत् बालिका निर्वी जैन बरड़िया !

फोटो - ऋतुराज बुड़ावनवाला

मौजूदा दौर में और भी प्रासंगिक हैं परसाई : डॉ. मोना परसाई

परसाई जी के साहित्य में स्त्री विषय पर रीडर्स क्लब का आयोजन

भोपाल। 'स्त्रियों के साथ मजाक करना पारिवारिक माहौल में उचित है लेकिन स्त्रियों का उपहास उड़ाना गलत है। उपहास दमितों का किया जाता है जबकि स्त्री समाज की धुरी हैं। हरिशंकर परसाई के साहित्य में स्त्री विषय पर अपने संबोधन में डॉ. मोना परसाई ने यह बात कही। चर्चा का आयोजन रीडर्स क्लब के मासिक साहित्यिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में किया गया था। परसाई जी की सौवीं जयंती के अवसर पर आयोजित इस संवाद में हिन्दी की सशक्त हस्ताक्षर एवं द संस्कार वैली स्कूल में हिन्दी की अध्यापिका डॉ. मोना परसाई ने परसाईजी के साहित्य में स्त्री विषय पर चर्चा करते हुए अनेक अनछुए पहलुओं को पाठकों के समक्ष रखा। उन्होंने कहा कि परसाई जी के लेखन में स्त्री विमर्श जैसा कोई श्रृंखलाबद्ध लेखन नहीं मिलता है लेकिन वे छोटे-छोटे प्रसंगों के माध्यम से स्त्री उत्पीड़न को गहरे ढंग से उकेरते हैं।

डॉ. मोना ने परसाई रचनावली से अनेक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि पश्चिम ने स्त्री-पुरुष के बीच तनाव को खत्म करने के लिए तलाक का रास्ता अख्तियार कर लिया है लेकिन हमारे यहां

चोरी-छिपे काम हो रहे हैं। विवाद की स्थिति में गांव में कुल्हाड़ी से हत्या कर दी जाती है तो शहर में स्त्री को जहर देकर मार डाला जाता है। यह आज का भी सच है। उन्होंने कहा कि स्त्रियों के लिए सांकेतिक शब्द गढ़े गए हैं, जैसा कि पत्नी के लिए मकान। ऐसे में सवाल उठता है कि स्त्री मकान है तो पति को चौराहा कहे जाने में क्या गलत है। डॉ. मोना परसाई ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श के मुद्दे को उठाया। उनका कहना था कि आज का स्त्री विमर्श और परसाई जी के स्त्री लेखन में बुनियादी अंतर है। आज स्त्री विमर्श अपने क्षेत्र में कामयाब स्त्रियों की बात करता है जबकि परसाईजी समूचे स्त्री समाज की चिंता करते हैं। ऐसे ही कई प्रसंगों के जरिए उन्होंने श्रोताओं को हरिशंकर परसाई के साहित्य से जोड़ा। इस कार्यक्रम का संचालन मनीषा शर्मा ने किया। अतिथि वक्ता का स्वागत श्रीमती कृति ने किया एवं आभार प्रदर्शन रीडर्स क्लब के संयोजक मनोज कुमार ने किया।

एमपी के हर शहर में बनेगा गीता भवन : सीएम यादव

● भगवान श्रीकृष्ण का कर्म प्रधान जीवन हमारे लिए आज भी प्रेरणा पुंज ● श्री विजय दत्त श्रीधर एवं श्री प्रभुदयाल मिश्र ने दिये व्याख्यान

भोपाल/इंदौर (नप्र)। प्रदेश के समस्त नगरीय निकाय में गीता भवन केन्द्र खोले जाएंगे। इन केंद्रों के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान और हमारे ग्रंथों, महापुरुषों के उपदेश आमजन तक पहुंचेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इन्दौर स्थित गीता भवन में भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में यह घोषणा की। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के अलग-अलग घटनाक्रमों के वृत्तान्त को बड़े ही रोचक तरीके बताया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा प्रदेश सरकार द्वारा इस तरह के व्याख्यान के माध्यम से आमजन तक भगवान श्रीकृष्ण के कर्म प्रधान जीवन की जानकारी पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। श्री विजय दत्त श्रीधर और श्री प्रभुदयाल मिश्र ने अपने व्याख्यान दिये।

मध्यप्रदेश के हर शहर में गीता भवन बनाया जाएगा। इनका निर्माण नगरीय निकायों के जिम्मे होगा, राशि प्रदेश सरकार देगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को इंदौर में ये घोषणा की। उन्होंने कहा कि बरसाना की तर्ज पर आदर्श गांव भी बनाए जाएंगे। यहां गौ-पालन, दूध उत्पादन और जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाएगा।

इंदौर के गीता भवन में मुख्यमंत्री यादव व्याख्यान माला में शामिल हुए। कार्यक्रम की थीम मां अहिल्या की कामना- हर घर कन्हैया, हर मां यशोदा थी। इस दौरान सीएम ने भगवान कृष्ण की पूजा-आरती कर उन्हें बांसुरी भेंट की। भजन भी गाया।

भगवान कृष्ण से सीखें 3 पाठ-सीएम डॉ. मोहन यादव ने व्याख्यान माला में कहा- भगवान कृष्ण से हमें तीन पाठ सीखने चाहिए... 1 दोस्ती निभाना, 2 चैलेंज लेना, तीसरी हिम्मत।

सीएम ने कहा- जन्माष्टमी को मनाने के पीछे ये भाव आना चाहिए कि हमारे परिवार में बच्चा कुलभूषण के रूप में पहचान बनाए।

गांधी ने किया गीता का अनुसरण, पीएम भी करते हैं-सीएम डॉ. यादव ने कहा- कृष्ण ने जो शिक्षा ग्रहण की, वो गीता के 18वें अध्याय में कर्म के रूप में दी गई है। गीता आदर्श के रूप में हम सबके बीच जानी जाती है। महात्मा गांधी ने उसी का अनुसरण किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी विदेशी मेहमानों को गीता भेंट करके हमारी संस्कृति से परिचित कराते हैं। कृष्ण जन्मोत्सव में पांच हजार बच्चे कृष्ण बनकर पहुंचे। यहां सीएम यादव ने कुछ बच्चों को माखन-मिश्री खिलाई।

कृष्ण ने कर्म प्रधान और पुरुषार्थ जीवन जीया- व्याख्यान माला में सीएम यादव ने कहा- भगवान बुद्ध ने कहा था कि मृत्यु का कारण जन्म है। पृथ्वी पर जिस भी जीव का जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु तय है। देवताओं ने भी मनुष्य योनि को अपनाया। पुण्य के संचय के लिए जन्म आवश्यक है। भगवान कृष्ण ने कर्म प्रधान और पुरुषार्थ जीवन जीया। इंदौर में हर घर कृष्ण, हर घर यशोदा की पहल अनूठी है।सीएम डॉ. मोहन यादव ने गीता भवन में व्याख्यान माला से पहले भगवान कृष्ण की पूजा-आरती की।

मिस इंडिया में एक भी दलित आदिवासी नहीं: राहुल गांधी

● रिजिजू ने कहा-बाल बुद्धि ब्यूटी पेजेंट्स में भी आरक्षण चाहते हैं, सरकार उन्हें नहीं चुनती

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने मिस इंडिया कॉम्पटीशन में दलित-आदिवासी महिलाओं की कमी वाले कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के बयान की आलोचना की। रिजिजू ने रविवार को कहा कि राहुल मिस इंडिया में भी आरक्षण चाहते हैं। ये सिर्फ बाल बुद्धि की दिक्कत नहीं है। जो लोग उनकी जय-जयकार करते हैं, वे भी उतने ही जिम्मेदार हैं।

दरअसल, नेता प्रतिपक्ष राहुल ने 24 अगस्त को प्रयागराज में कहा कि मैंने मिस इंडिया की लिस्ट चेक की। इसमें कोई दलित, आदिवासी या ओबीसी कम्युनिटी की महिला नहीं थी।

बदल सकती है हरियाणा में वोटिंग और काउंटिंग की डेट !

बीजेपी और इनेलो की मांग पर चुनाव आयोग कर रहा विचार

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए अब जब कुछ ही हफ्ते रह गये हैं, तब बीजेपी और इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) ने मतदान और मतगणना तिथियों को आगे बढ़ाने का अनुरोध किया है। निर्वाचन आयोग को लिखे पत्र में दोनों दलों ने चुनाव तिथि से पहले और बाद में छुट्टियों का हवाला देते हुए कहा है कि इससे मतदान में गिरावट आने की आशंका है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक चुनाव आयोग इसको लेकर जल्द फैसला करेगा। मंगलवार तक इस पर अपना फैसला बता सकता है। मतदान और मतगणना तारीखों को बदलने की मांग पर कांग्रेस ने पलटवार किया है।

मिल गया सोने का भंडार राजस्थान होगा मालामाल !

स्वर्ण भंडार वाला देश का चौथा राज्य बना राजस्थान

तीन ब्लॉक के खनन की नीलामी पूरी, एक की जांच

कोटा (एजेंसी)। वीरों की जननी रही राजस्थान की धरती अब सोना उगलेगी। बीजेपी विधायक संदीप शर्मा के अतारांकित सवाल के जवाब में राज्य सरकार ने बताया कि प्रदेश के 4 स्थानों पर स्वर्ण धातु के भंडार पाए गए हैं। इनमें से 3 ब्लॉक की खनन के लिए नीलामी पूरी हो चुकी है। वहीं एक ब्लॉक में परमाणु खनिज की सम्भावना होने से परमाणु खनिज निदेशालय की ओर से अन्वेषण किया जा रहा है। राजस्थान देश का चौथा स्वर्ण भण्डार वाला राज्य बन गया है। देश के 25 फीसदी सोने की आपूर्ति यहां से होने का अनुमान है। विधायक संदीप शर्मा ने आरोप लगाया है कि साल 2018 में स्वर्ण भण्डार की प्रारम्भिक खोज के बाद कांग्रेस शासन में इस दिशा में कोई काम नहीं किया गया। वहीं भाजपा शासन आने के बाद इस दिशा में त्वरित प्रयास किए गए। रेकॉर्ड समय में नीलामी प्रक्रिया पूरी कर ली गई। इससे न

केवल अगले 50 सालों में 1 लाख करोड़ की आय होने का अनुमान है। साथ ही प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से 50 हजार युवाओं को रोजगार मिलने के रास्ते खुले हैं। भाजपा विधायक संदीप शर्मा के सवाल के जवाब में सरकार ने बड़ी जानकारी दी है।

संजय रॉय का काल बनेंगे सीबीआई के 'नौ हथियार'

कोलकाता केस में आरोपी के खिलाफ हाथ लगा अहम सबूत

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर की रेप के बाद हत्या केस में सीबीआई की जांच चल रही है। फिलहाल मुख्य आरोपी समेत छह अन्य का पॉलीग्राफी टेस्ट हो चुका है। इस केस में कोलकाता पुलिस ने 53 आइटम्स सीज किए हैं। इनमें नौ ऐसे आइटम्स हैं जो मुख्य आरोपी संजय रॉय के खिलाफ बेहद अहम हथियार साबित होंगे। इनमें संजय रॉय के कपड़े, अंडरगारमेंट्स और क्राइम के वक्त पहनी हुई सैंडल्स जैसी चीजें शामिल हैं। इसके अलावा फोन टॉवर की लोकेशन भी बेहद अहम भूमिका निभा सकती है। इसके मुताबिक नौ अगस्त को घटना के वक्त संजय रॉय आरजी कर अस्पताल के सेमीनार हॉल में मौजूद था। संजय रॉय की बाइक और उसका हेलमेट भी बतौर एविडेंस रखा गया है। सीबीआई सूत्रों ने रविवार को बताया कि एक हफ्ते के अंदर फोरेंसिक रिपोर्ट्स आ सकती हैं।

रिश्वतखोर बाबू की राजदार पत्नी-सास

- अधिकांश संपत्ति इन्ही के नाम, घर से मिला 100 ग्राम सोना, डेढ़ किलो चांदी और 50,000 कैश

भोपाल (नप्र)। लोकायुक्त पुलिस ने शुक्रवार को भोपाल डेवलपमेंट अथॉरिटी (बीडीए) के बाबू को 40 हजार रुपए की रिश्वत लेते ट्रैप कर लिया। जांच में चौकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। शनिवार सुबह चार बजे तक टीम आरोपी के घर होटल और

पत्नी के ऑफिस में सर्चिंग करती रही। अब तक की जांच में आरोपी तारकचंद की 80 करोड़ से अधिक की चल-अंचल संपत्ति की जानकारी मिल चुकी है। उसकी सबसे बड़ी राजदार पत्नी और सास हैं। इन दोनों के ही नाम सबसे ज्यादा संपत्ति हैं। इसी के साथ आरोपी के घर की सर्चिंग में टीम को 100 ग्राम सोना, 50 हजार रुपए कैश, डेढ़ किलो चांदी मिल चुकी है। ओरिएंटल बैंक के जॉइंट अकाउंट जो सास और पत्नी के नाम है, के दस्तावेज सहित एक बैंक लॉकर होने के प्रमाण मिले हैं। इसी के साथ दो दर्जन से अधिक चल-अचल संपत्ति के दस्तावेज कई ब्लेंक चेक मिले हैं। हालांकि इन चेक पर साइन किए हुए हैं। सोमवार को पुलिस तारकचंद दास के बैंक लॉकर की सर्चिंग करेगी। इसी के साथ उसकी सास और पत्नी से भी पूछताछ की जाएगी।

12 फीट लंबे अजगर ने निगला बकरा

खेत की मेढ़ पर कुंडली मारकर बैठा था, सागर में रेस्क्यू करने पर उगल दिया

सागर (नप्र)। सागर में 12 फीट के अजगर ने बकरे को निगल लिया। गांव वालों ने देखा, तो वन विभाग को सूचना दी। फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के कर्मचारियों ने अजगर का रेस्क्यू किया। इस दौरान अजगर ने बकरे को उगल दिया। घटना शनिवार रात करीब 11 बजे सानौधा थाना क्षेत्र के रिछावर गांव की है।

शनिवार शाम करीब 6 बजे गांव के कुछ लोग खेत से लौट रहे थे। यहां देवेंद्र रजक के खेत की मेढ़ पर झाड़ियों में अजगर कुंडली मारकर बैठा दिखा। पास जाकर देखा, तो वह बकरे को

निगल रहा था। उसने बकरे को अपने चपेट में ले रखा था। सूचना पर गांव के लोग इकट्ठा हो गए। गांव वालों ने वन विभाग को सूचना दी।

रात में उत्तर वन मंडल की टीम रिछावर पहुंची। वनपाल देवेंद्र राय, संदीप यादव, केके प्रजापति ने स्नेक कैचर अकील बाबा के साथ रेस्क्यू शुरू किया। इस दौरान अजगर ने धीरे-धीरे बकरे को उगल दिया, लेकिन बकरे की मौत हो चुकी थी। अजगर को रविवार दोपहर जंगल में ले जाकर छोड़ दिया गया।

50 किलो के अजगर ने 30 किलो के बकरे को निगला था: स्नेक कैचर अकील बाबा ने बताया कि अजगर गांव में खेत की मेढ़ पर था। इसी दौरान बकरियां खेत में चरने पहुंचीं, तभी अजगर ने एक बकरे को जकड़ लिया। बकरे का वजन करीब 30 किलो था।

स्नेक कैचर अकील बाबा ने बताया कि बारिश होने के कारण खेत में कीचड़ था। ऐसे में दो किमी पैदल खेतों में चलकर टीम मौके पर पहुंची। यहां देखा तो करीब 12 फीट लंबे अजगर ने बकरे को निगल रखा था। अजगर का वजह करीब 50 किलो है। अजगर को सुरक्षित पकड़कर वन विभाग को सौंपा गया है।

भदभदा, कलियासोत और केरवा डैम के गेट खुले

भोपाल में सीजन का कोटा फुल, दिनभर रुक-रुक कर बारिश; सड़कों पर चली बोट

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बारिश का कोटा पूरा हो गया है। रविवार को दिनभर रुक-रुक कर कभी तेज तो कभी रिमझिम बारिश होती रही। इससे कई इलाकों में जलभराव के हालात बन गए। भदभदा के तीन और कलियासोत के 6 और केरवा डैम के चार गेट खोल दिए गए। खेजड़ा बरामद में जलभराव होने पर बोट को चलाना पड़ा। भोपाल के करोंद इलाके में कई घरों में पानी भर गया था।

भोपाल में पिछले 10 साल में पांचवीं बार सबसे ज्यादा पानी गिरा है। इससे पहले, साल 2022 में 74 इंच बारिश हुई थी। भोपाल में अब तक 39.2 इंच बारिश हो गई है। रात में ही 4 इंच बारिश हो गई, जबकि 24 घंटे में 4.5 इंच पानी गिरा।

भोपाल की सामान्य बारिश 37.6 इंच है। इस हिसाब से अबकी बार 1.6 इंच पानी ज्यादा गिर गया है। अब भोपाल में जो भी बारिश होगी, वह बोनस रहेगी। जानकारी के अनुसार- रविवार सुबह भदभदा डैम के 11 में से तीन गेट खोल दिए गए। पहले सुबह 6.45 बजे एक और सुबह 8.15 बजे दूसरा और दोपहर करीब 1:30 बजे तीसरा गेट खोला गया। शनिवार भी दो गेट खोले गए थे, लेकिन दोपहर में बंद कर दिए गए थे। वहीं, कलियासोत डैम के भी 13 में से 6 गेट और केरवा डैम के 4 गेट से पानी छोड़ा जा रहा है। भोपाल के पास कोलार डैम में भी पानी की आवक जारी है। भोपाल की इंद्र विहार कॉलोनी में एक फीट तक पानी भर गया। इससे रहवासियों को परेशानी हो रही है।

भोपाल की सड़कों पर चली बोट- भोपाल के खेजड़ा बरामद में जलभराव होने पर जिला प्रशासन को बोट चलाना पड़ी। यहां 50 से अधिक परिवार पानी भरने की वजह से घरों में ही फंसे हैं। गोविंदपुरा एसडीएम रवीशकुमार श्रीवास्तव समेत पुलिस के अधिकारियों ने बोट में बैठकर जायजा लिया। एसडीएम श्रीवास्तव ने बताया कि इलाके में जलभराव है। इस वजह से बोट चलाकर लोगों के पास पहुंचे। फिलहाल किसी का भी रेस्क्यू नहीं किया गया है। पानी कम होने पर लोगों ने घर में ही सुरक्षित रहने की बात कही है। शिफ्टिंग की जरूरत पड़ने पर पूरी व्यवस्था की गई है।

अंबेडकर नगर में गिरा पेड़- तेज बारिश की वजह से भोपाल के अंबेडकर नगर के पास कई साल पुराना एक पेड़ गिरा गया। बारिश के चलते पेड़ की जड़ें कमजोर हो गई थीं। बीच सड़क पर पेड़ गिरने से ट्रैफिक भी प्रभावित हुआ।

रात में 50 से ज्यादा इलाकों में बिजली गुल- इधर, रात में 50 से ज्यादा इलाकों में बिजली गुल रही, जिससे लोगों की मुश्किलें बढ़ी रही। तुलसीनगर समेत कई इलाकों में यह स्थिति देखने को मिली। भोपाल में 23 जून को मानसून एंटर हुआ था। जून, जुलाई और अगस्त में कोटे से ज्यादा पानी गिर गया। यही कारण है कि अगस्त के आखिरी दिनों में ही कोटा पूरा हो गया है। भोपाल की सामान्य बारिश 37.6 इंच है। तेज बारिश की वजह से भोपाल के कलियासोत, भदभदा और केरवा डैम के गेट खुल चुके हैं। वहीं, भोपाल के पास कोलार डैम में भी अच्छा पानी आ गया।

10 साल में 3 बार आंकड़ा 50 इंच के पार

पिछले 10 साल के आंकड़ों पर नजर डाले तो 2016, 2019 और 2022 में 50 इंच से अधिक बारिश हुई थी। 2022 में तो आंकड़ा 73 इंच तक पहुंच गया था। पिछले साल सामान्य से बारिश 30.9 इंच ही पानी गिरा था।

प्रॉपर्टी डीलर ने आरक्षक के पैर पर चढ़ाई कार

शराब पीने का मना करने पर की बदसलूकी, झूमाझटकी के बाद आरोपी गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आरआरएल तिराहा पर सड़क किनारे कार खड़ी कर युवक शराब पी रहा था। बागसेवनिया थाने के आरक्षक सुमन कुमार ने उसे घर जाने को कहा। इस पर आरोपी ने बहस शुरू कर दी। आरक्षक ने थाने चलने की बात की तो आरोपी ने उसके साथ झूमाझटकी कर दी।

भागते हुए आरोपी ने कार का एक पहिया आरक्षक के पांव पर चढ़ा दिया। घटना शनिवार-रविवार की दरमियानी रात की है। पुलिस ने रविवार सुबह केस दर्ज किया है। आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है।

एसआई मुकेश स्थापक ने बताया कि आरक्षक सुमन कुमार 2741 बागसेवनिया थाने में पदस्थ हैं। उनकी ड्यूटी शनिवार की रात चार्ली पर थी। गश्त के दौरान आरआरएल तिराहा पर सड़क किनारे उन्हें एक कार दिखी। अंदर लाइट जल रही थी। आरक्षक ने कार चेक की तो अंदर शराब पीता युवक मिला।

उसे वहां से जाने को कहा गया तो उसने बदसलूकी शुरू कर दी। आरक्षक ने उसे थाने चलने को कहा तो आरोपी ने झूमाझटकी कर दी। इतना ही नहीं भागने का प्रयास किया। इस दौरान उसने कार का एक पहिया आरक्षक के पांव पर चढ़ा दिया। जिससे उसे चोट आई हैं। आरक्षक की शिकायत पर शासकीय कार्य में बाधा पहुंचाने तथा मारपीट की एफआईआर दर्ज की है।

प्रॉपर्टी डीलर है आरोपी

आरोपी की पहचान सिद्धार्थ अग्रवाल के रूप में हुई है। वह स्वयं को प्रापर्टी डीलर बता रहा है। पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया है। उसकी कार नंबर एमपी 04 जेड एफ 0650 को भी कब्जे में लिया है।

एमपी में पहली बार जन्माष्टमी पर खुलेंगे स्कूल

श्रीकृष्ण की शिक्षा और मित्रता का पाठ पढ़ाना होगा; दो आदेश से टीचर असमंजस में

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में पहली बार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर 26 अगस्त को स्कूल खुलेंगे। स्कूल शिक्षा विभाग ने आदेश में कहा है कि जन्माष्टमी के दिन स्कूलों में भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षा और मित्रता के प्रसंगों पर आधारित कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इससे पहले सरकार ने जन्माष्टमी के दिन अवकाश घोषित किया था। शासकीय शिक्षक संघ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष उपेंद्र कौशल ने बताया कि आम तौर पर जन्माष्टमी पर छुट्टी होती है। लेकिन इस बार हमारे सामने दो आदेश हैं। पहले आदेश में शासन ने सरकारी अवकाश घोषित किया है। वहीं, दूसरे आदेश में स्कूल शिक्षा विभाग ने कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही है। भोपाल में सुबह 11 बजे बरखेड़ी से चल समारोह चलेगा। यहां से यह एक्सटॉल कॉलेज, जिंसी चौराहा, अहीर मोहल्ला, शब्बन चौराहा, लिली टॉकीज से होता हुआ जहांगीराबाद में शाम करीब 5 बजे खत्म होगा। भोपाल में लखेरापुरा से निकलने वाले चल समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान शामिल होंगे।

भोपाल के स्कूलों में होंगे धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम- भोपाल जिला शिक्षा अधिकारी एनके अहिरवार ने बताया- शासन के आदेश का पालन करते हुए सभी शासकीय और अशासकीय स्कूलों को सूचना दे दी गई है। स्कूलों में आदेशानुसार कार्यक्रम किए जाएंगे। जनप्रतिनिधियों को भी बुलाया जाएगा। कई तरह की नाट्य प्रस्तुतियां और भगवान श्रीकृष्ण पर आधारित कार्यक्रम किए जाएंगे।

भोपाल में एक्सीलेंस स्कूल के प्रिंसिपल सुधाकर पाराशर ने कहा, शासन के आदेश आए हैं कि इस बार सांस्कृतिक कार्यक्रम होना है। हमने जनप्रतिनिधियों से भी कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए संपर्क किया है। हमीदिया गर्ल्स

स्कूल की प्रिंसिपल विमला शाह ने कहा कि शासकीय आदेश का पालन करते हुए स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

उज्जैन में भी सोमवार को खुलेंगे स्कूल- सावन के महीने में सोमवार को महाकाल की सवारी होने के चलते उज्जैन में अवकाश घोषित किया गया था। नए सरकारी आदेश के बाद सोमवार को स्कूल खुलेंगे और सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। ऐसे में अब रविवार और सोमवार दोनों दिन स्कूल खुलेंगे।

भोपाल में फिल्मी स्टाइल में यात्री बस में लूटपाट

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जहांगीराबाद इलाके में फिल्मी स्टाइल में बस के आगे ऑटो लगाने के बाद तीन बदमाशों ने बस को रोका। आरोपियों ने बस में दाखिल होते ही कंडक्टर के गले पर चाकू रख दिया। बदमाशों ने उसकी जेब में रखे 8 हजार रुपए छीन लिए। इसके बाद बस में ही बैठे रहे। गल्ला मंडी से इस बस में एक अन्य कंडक्टर सवार हुआ तो आरोपियों ने उसके कान में चाकू मार दिया।

उसकी जेब में रखे तीन हजार रुपए छीन लिए। इसी के साथ उसका मोबाइल फोन भी बदमाश लूटकर फरार हो गए। हमलावरों ने एक अन्य कंडक्टर को भी चाकू मारकर घायल किया है। मामले में पुलिस ने एक नामजद सहित तीन के खिलाफ केस दर्ज किया है। उनकी तलाश की जा रही है।

पुलिस के मुताबिक राजेश लोवंशी (45) पुत्र अतर सिंह लोवंशी निवासी मंडीदीप जिला रायसेन मंडीदीप-भोपाल के बीच चलने वाली राठौर ट्रैवल्स की बस में बतौर कंडक्टर चलते हैं। शनिवार की रात करीब 10:30 बजे बस यात्रियों को लेकर भोपाल आई। बरखेड़ी पेट्रोल पंप के पास बस के आगे नसीम उर्फ ब्रेकर निवासी मदर इंडिया कॉलोनी ने सवारी ऑटो को लगाया। बस को रोकने के बाद नसीम व उसके दो साथी इसमें सवार हो गए। अंदर आते ही नसीम और साथियों ने राजेश को पीटा और गले पर चाकू अड़ा दिया।

काफिला रुकवाकर शिवराज को पिलाई चाय

रेतघाट पर लोग बोले-'मामा मिस यू' कृषि मंत्री ने कहा- 'मैं भी मिस कर रहा हूं'

भोपाल (नप्र)। महाराष्ट्र के जलगांव में लखपति दीदी कार्यक्रम में शामिल होने के बाद केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान भोपाल पहुंचे। राजा भोज एयरपोर्ट पर उतरने के बाद शिवराज अपने आवास की ओर आ रहे थे। रास्ते में रेतघाट के पास खड़े लोगों ने जैसे ही शिवराज को देखा तो उन्हें रुकने का इशारा किया।

शिवराज ने ली चाय की चुस्कियां, खाया पान- रेतघाट पर शिवराज रुके और लोगों से मेल-मुलाकात की। इसी दौरान लोगों ने उनसे चाय पीने का अनुरोध किया तो उन्होंने मामा टी स्टॉल पर चाय पी। हल्की बारिश के बीच चाय की चुस्कियां लेने के बाद शिवराज पान खाने के लिए पान की दुकान पर पहुंचे। पान वाले ने शिवराज से पूछा कि कैसा पान लगाऊं तो उन्होंने कहा छालिया (सुपारी) डाल दो। पान खाने के बाद शिवराज जैसे ही पैसे देने लगे तो पान दुकानदार ने पैसे लेने से मना करते हुए कहा- पैसे रहने दीजिए। आप बड़े भाई हैं सिर पर हाथ रख दीजिए। हालांकि जिद के बाद शिवराज ने पैसे दिए और कंधे पर हाथ रखा। इस दौरान शिवराज के साथ सेल्फी लेने वालों की भीड़ लगी रही।

लखपति दीदी सम्मेलन में शामिल होकर भोपाल लौटे- केंद्रीय मंत्री शिवराज चौहान ने महाराष्ट्र के जलगांव में आयोजित लखपति दीदी सम्मेलन में शामिल हुए। इस सम्मेलन में शिवराज ने कहा, आज 11 लाख महिलाओं को लखपति दीदी के रूप में प्रमाणित किया जाएगा। आज स्वयं सहायता समूहों के खातों में 2500 करोड़ रुपये का रिवॉल्विंग फंड जमा किया जाएगा और बैंकों द्वारा स्वयं सहायता समूहों के खातों में 5000 करोड़ रुपये जमा किए जा रहे हैं।

शिवराज ने कहा-

परसों से भारी बारिश हो रही है। हमलोग कल से चिंतित थे कि रात भर बारिश होने के बाद सुबह हमारी बहनें कैसे आएंगी। लेकिन, भारी बारिश के बावजूद आप अपने भाई मोदी जी को सुनने के लिए हजारों की तादाद में यहां आईं। यहां पंडाल छोटा पड़ गया, लेकिन बहनों की संख्या बढ़ती जा रही है। मैं इन बहनों और उनके प्रेम को प्रणाम करता हूं। उन्होंने आगे कहा, पीएम मोदी का संकल्प है कि कोई भी बहन मजबूर न रहे। उन्होंने लखपति दीदी अभियान इसलिए चलाया, जिससे किसी भी बहन की आंख में आंसू न आए। उसके चेहरे पर मुस्कान बनी रहे। मुझे यह बताते हुए गर्व होता है कि पीएम मोदी के संकल्प के अनुसार, एक करोड़ लखपति दीदी बन चुकी हैं।

संपादकीय

मोदी की यूक्रेन यात्रा का फलितार्थ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का युद्धग्रस्त यूक्रेन का दौरा साहसिक तो था ही लेकिन यह सच में ऐतिहासिक तब सिद्ध होगा, जब तीन साल से जंग लड़ रहे भारत के दोनों दोस्तों रूस और यूक्रेन के बीच शांति समझौता होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमिर जेलेंस्की से कहा भी कि युद्ध कभी किसी समस्या का हल नहीं हो सकता। बातचीत और कूटनीति ही समस्या का एकमात्र समाधान है और हमे इस दिशा में जल्दी आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अगर दोनों पक्ष चाहें तो भारत इस मामले में सक्रिय भूमिका निभा सकता है। मैं व्यक्तिगत तौर पर भी इसमे पूरी मदद करूंगा। मोदी के इस वक्तव्य पर जेलेंस्की का बयान भी सकारात्मक था। उन्होंने कहा कि युद्ध को खत्म करना और न्यायपूर्ण शांति की स्थापना ही हमारा अंतिम लक्ष्य है। ये वही जेलेंस्की हैं, जिन्होंने जुलाई के पहले हफ्ते में मोदी की रूस यात्रा और वहां के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन से गले मिलने पर तीखी प्रतिक्रिया जताई थी। लेकिन मोदी यूक्रेन में भी जेलेंस्की से भी गर्मजोशी से मिले। हाथ मिलाया और दोनों गले भी मिले। इस दौरान दोनों देशों के बीच कृषि, खाद्य, उद्योग, चिकित्सा, संस्कृति और मानवीय सहायता को लेकर समझौते हुए। भारत और यूक्रेन की बीच बहुत अच्छे रिश्ते रहे हैं। हालांकि 1992 में सोवियत संघ से अलग होने के बाद से भारत का कोई राष्ट्राध्यक्ष यूक्रेन नहीं गया। खुद मोदी भी चौतरफा जानलेवा हमले की आशंका के बीच यूक्रेन गए और शांति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। मोदी ने जो कहा, उसका आशय यही है कि हम गांधी के देश के लोग हैं, जिसकी हमेशा से शांति में आस्था रही है। मोदी की यूक्रेन यात्रा इस मायने में भी अहम है कि जहां उस देश में भारत के करीब 20 हजार बच्चे पढ़ रहे हैं, वहीं यूक्रेन और रूस के बीच लगभग ढाई साल से चल रहे युद्ध के चलते भारत और यूक्रेन के बीच व्यापार लगातार कम होता गया है। 2021 में यह 3.31 बिलियन डॉलर था, जो अब घटकर 0.78 बिलियन डॉलर रह गया है। गौरतलब है कि भारत अपनी सूरजमुखी तेल की आवश्यकता का 75 फीसदी अभी यूक्रेन से आयात करता है। जहां तक मोदी के यूक्रेन दौरे के वैश्विक महत्व का सवाल है तो इस दौरे पर पूरी दुनिया की नजर है कि क्या मोदी इन दोनों देशों के बीच शांति का कोई रास्ता खोज सकते हैं? रूस और यूक्रेन दोनों भारत के दोस्त हैं। इसलिए भारत किसी एक का पक्ष नहीं ले सकता है। यही भारत की ताकत भी है कि उसे दोनों देशों का विश्वास हासिल है। दो शत्रु देशों से सौहार्द्रपूर्ण सम्बंध कायम रखना तार पर चलने की कसरत जैसा है। मोदी की रूस यात्रा पर यूक्रेन की जैसी तीखी प्रतिक्रिया आई थी, वैसी मोदी की यूक्रेन यात्रा पर नहीं आई है। तो क्या इस यात्रा के बारे में मोदी ने पहले ही पुतिन को विश्वास में लिया था। रूस यूक्रेन युद्ध के चलते एक सच्चाई यह भी है कि रूस को इससे अब तक कुछ भी हासिल नहीं हुआ है। बड़ी संख्या में उसके सैनिक मारे जा चुके हैं। माल का भी नुकसान हुआ है। सबसे बड़ी बात कि रूस ने यूक्रेन पर हमला क्यों किया, इसका ठोस कारण आज भी किसी को नहीं मालूम है। उधर यूक्रेन भी अमेरिका और पश्चिमी देशों की मदद से रूस का बखूबी मुकाबला कर रहा है। हालांकि उसका नुकसान भी बहुत हुआ है। ऐसे में दोनों देशों को शांति की दरकार है। प्रधानमंत्री मोदी इसके लिए दोनों पक्षों को मान्य मध्यस्थ हो सकते हैं। लेकिन क्या वाकई ऐसा होगा, इस सवाल का जवाब अभी मिलना है।

नजरिया

नियोजित युद्ध और नव निर्माण का साम्राज्यवाद

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

दुनिया में हथियारों का व्यापार निरंतर वृद्धि पर है। जिनेवा अकादमी की अध्ययन रपट के अनुसार अभी दुनिया में लगभग 25 घोषित-अघोषित, छोटे-बड़े युद्ध या संघर्ष चल रहे हैं। मध्य-पूर्व और अफ्रीका में बारह जगह युद्ध या संघर्ष जारी हैं। इराक, सीरिया और सूडान इनके मुख्य क्षेत्र हैं। एशिया में पाकिस्तान, चीन, अफगानिस्तान और म्यांमार में, यद्यपि युद्ध तो नहीं हैं, परंतु अंतर-संघर्ष युद्ध के जैसे हैं। पाकिस्तान में अफगानिस्तान के तालिबानी अब इतनी संख्या में बढ़ चुके हैं कि वे एक प्रकार से पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच युद्ध के पर्याय जैसा बन रहे हैं। चीन में चीनी और रोहिंग्या, म्यांमार में बौद्ध और रोहिंग्या के बीच, संघर्ष हथियारों से हो रहा है। यूरोप में, रूस और यूक्रेन युद्ध को अब लगभग 2 वर्ष होने को आ रहे हैं और युद्ध जारी है। यूरोप और अमेरिका के द्वारा हथियारों की आपूर्ति से यूक्रेन लड़ तो रहा है, परंतु जीतने की स्थिति में नहीं है। यूरोप या अमेरिका लड़ने को हथियार और पैसा तो दे सकते हैं परंतु सैनिकों का अभाव पूरा नहीं कर सकते। हालांकि अब दुर्घटनाएं महत्वपूर्ण हुई है (एक) अमेरिका ने क्यों को बचाने के लिए यूक्रेन को प्रतिबंधित हथियारों की इस्तेमाल की सहमति दी है, (दो) नाटो ने भी अब सैनिक युद्ध में से भगत की संकेत दिए और यह दोनों ही मौके युद्ध के विस्तार के लिए हैं। इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध को भी लगभग 7-8 माह होने को हैं और समाप्त या शांति होने के बजाय, नए-नए युद्ध के केंद्र तैयार हो रहे हैं। हमास के समर्थन में, सीरिया ने कुछ हलचल शुरू की थी। परंतु वह कोई बड़ा रूप नहीं ले पाई। ईरान ने हमास के समर्थन में इसराइल पर मिसाइल हमला किया था, जिसे अमेरिकी सैटेलाइट ने पहचान कर गंतव्य तक पहुंचने से पहले ही यानि इजरायल की सीमा में पहुंचने से पहले ही नष्ट कर गिरा दिया। बाद में इजरायल ने ईरान के परमाणु ठिकानों के पास हमला किया। परमाणु ठिकाने तो नष्ट नहीं हुए परंतु ईरान को खतरे का संकेत-बल दे गया। उसके बाद ईरान ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी के अजरबेजान से आते हुए रास्ते में मृत्यु को लेकर भी पहले इजराइल पर संदेह की उंगलियां उठाई गई थीं, पर वह सही नहीं थीं, वरना युद्ध का एक नया दायरा खुल जाता। अमेरिका की नीति दो मुखी है एक तरफवह नाटो संधि के अनुसार इजरायल की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और दूसरी तरफ इजराइल को समय-समय पर उपदेश भी देता रहता है। यद्यपि जो बाइडेन ने अभी तीन सूत्रीय फार्मूला रखा है।

1. इजराइल युद्ध बंद करें 2. हमास इजरायली बंधकों को रिहा करें 3. गाजा पट्टी में हुए विनाश के पुनर्निर्माण का कार्य अमेरिका करेगा। इस प्रस्ताव से कुछ युद्ध बंदी की संभावनाएं बढ़ी है।

बताया जाता है कि इस साल दुनिया में ढाई सौ (250) लाख करोड़ रुपए का हथियारों का व्यापार होगा। मतलब भारत जैसे विशाल देश के वार्षिक बजट का 6 गुना। अमेरिका हथियार निर्यातकों में दुनिया का सबसे बड़ा निर्यातक है जो 42 फीसदी हथियारों का निर्यात करता है। रूस लगभग 11 फीसदी, फ्रांस भी लगभग 11 फीसदी के आसपास, चीन व जर्मनी प्रत्येक लगभग 5.50 फीसदी तक के हथियारों के निर्यातक देश हैं। अभी भारत ने भी कुछ हथियारों के निर्यात करने का सिलसिला शुरू किया है पर वह नगण्य जैसा है। भारत को हथियार निर्यातकों की मुख्य सूची में आने के लिए अभी लंबा समय लगेगा। यूरोप हथियारों का निर्यातक भी है और आयातक भी। यूरोप में पिछले तीस वर्षो में हथियारों की खरीद में लगभग तेरह फीसदी की वृद्धि हुई है। चीन और ताइवान के बीच जो संघर्ष है उसके चलते पिछले दो साल में अमेरिका ताइवान को सत्रह लाख करोड़ रुपए के हथियार बेच चुका है। ताइवान के लिए अस्तित्व बचाने का संकट है। चीन उसे अपना हिस्सा बता कर कब्जाना भी चाहता है। ऐसा ही संकट यूक्रेन के सामने है। वह अपने देश की आजादी के लिए लड़ रहा है। ऐसा ही अस्तित्व का संकट इजराइल के समक्ष है। अपनी जमीन की वापसी के नाम पर यही संकट फिलिस्तीन का भी है।

दुनिया कितनी विचित्र ढंग से चलती है और कितने दोहरे चेहरे की है!! यह इसी से स्पष्ट हो जाता है कि स्वीडन- एक ऐसा देश है जो हथियारों का बड़ा निर्यातक है। वह हथियारों का निर्माता कम है परंतु वह निर्यातक बड़ा है। जहां एक तरफ स्वीडन युद्ध से रक्षा के लिए या युद्ध के लिए हथियार निर्यात करता है, वहीं दूसरी तरफ वही स्वीडन दुनिया में शांति के नाम पर स्थापित नोबेल पुरस्कार भी देता है। यानि मौत और शांति दोनों का एकमुश्त व्यापार का माध्यम है-स्वीडन। वैसे यह भी कहा जाता है कि नोबेल पुरस्कार का अप्रत्यक्ष नियंत्रण अमेरिका की गुप्तचर एजेंसी सीआईए के हाथों में है। दुनिया में हर प्रकार के अपराध, युद्ध, फिरका-परस्ती की फैक्ट्रियों को नियंत्रित करने वाली सीआईए नोबेल पुरस्कार को भी नियंत्रित करती है।

अभी तक युद्ध मुख्यता जमीन से लड़े जा रहे हैं आसमान का प्रयोग एक सहायक के रूप में तो होता है परंतु संचालन संचालित करने का केंद्र जमीन पर ही है ईरान की मिसाइलों को, अमेरिकी इजरायली मिशेल ने सरदार से पता कर अपनी एंटी मिसाइल से नष्ट कर दिया परंतु मिसाइल लोगों को छोड़ने या एंटी मिसाइल को छोड़ने वाले केंद्र को जमीन पर ही है पर अब विज्ञान का विकास नए खतरों का भी कारण बन रहा है।

विज्ञान ने अंतरिक्ष के ग्रहों के द्वार खोल दिए हैं। शुरुआत तो इसकी अमेरिका, पेंटागन (अमेरिका प्रतिरक्षा विभाग) और नासा ने की थी। परंतु अब ऐसी जानकारियां मिली हैं कि चीन ने भी अंतरिक्ष में अपने सैन्य ठिकाने बनाए हैं तथा वहां से युद्ध की तैयारी कर रहा है। वही रूस भी अपने परमाणु ठिकाने बनाने की तैयारी कर रहा है। अगर यह हो गया तो रुस, अंतरिक्ष में घूम रहे सैटेलाइटों को नष्ट कर सकता है। उनके नष्ट होने का मतलब अमेरिका और दुनिया के संचार-तंत्र का नष्ट होना होगा। बताया जाता है कि यूक्रेन से युद्ध में रूस ने इलेक्ट्रॉनिक जैनिम क्रूज का इस्तेमाल किया था। जिसको अंतरिक्ष के यंत्रों से नियंत्रित किया गया। इसलिए रूस अमेरिकी दबाव से बाहर है।

ताइवान को लेकर भी अभी हाल में चीन के राष्ट्रपति ने भी बयान दिया है कि अगर कोई चीन की ओर देखेगा तो हम उसका सिर फोड़ देंगे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके इस बयान का अर्थ चीन के स्पेस में बनाए गए हथियारों के केंद्र से है। अब इस अंतरिक्ष युद्ध की चुनौती के लिए अमेरिका भी सावधान होकर, अंतरिक्ष में नए युद्ध के लिए हथियारों के केंद्र विकसित कर रहा है। अंतरिक्ष के माध्यम से रूस और चीन के द्वारा उसके सैटेलाइट या उसके प्रभाव के देशों के लिए कोई खतरा न हो इस तैयारी में लग गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी अब युद्धों को नया स्वरूप दे रही है। साथ ही हथियारों के प्रयोग के लिए भी मानव विहीन हथियारों का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। अंतरिक्ष और नए-नए ग्रह जहां विज्ञान और मानव पहुंच रहे हैं उन्हें हथियारों का केंद्र व नष्ट करने का काम भी परस्पर युद्ध की प्रतिस्पर्धा से शुरू हो गया है।

अगर भविष्य में कोई अंतरिक्ष-केंद्रों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का युद्ध होगा, तो क्या दुनिया बच सकेगी? यह बड़ा प्रश्न है। परमाणु हथियारों का युद्ध, मानव-विहीन मिसाइलों के द्वारा हो सकता है। परंतु, जहां मिसाइल का हमला होगा, वहां तो मानव ही होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संचालित, मानव-विहीन संचालित मिसाइल क्या इस दुनिया को और मानवता को नष्ट करने का माध्यम बनेंगे? यह विचारणीय है।

दुनिया के हथियारों के उत्पादक और निर्यातक देश अपनी संपन्नता और विलासिता के लिए हथियार निर्यात पर निर्भर हैं। हथियारों के निर्यात के लिए युद्ध और संघर्ष जरूरी है। इसलिए अब हथियार निर्यातक देश और कंपनियां योजनाबद्ध ढंग से उन स्थानों या मुद्दों को चयनित कर रही हैं, जहां अगर अभी युद्ध है-तो उसे और बढ़ाया जाए, जहां अभी युद्ध नहीं है वहां युद्ध कराया जाए। जहां बड़े युद्ध की संभावना न हो, वहां, ऐसे अंतर-संघर्ष शुरू कराए जाएं जो घोषित युद्ध न हो परंतु अघोषित युद्ध जैसे हों। युद्ध रहेंगे तो-हथियार रहेंगे। हथियार रहेंगे तो हथियार बनाने वाले देशों का वर्चस्व रहेगा। इसलिए युद्ध पैदा करना, शांति के तत्वों को नष्ट कर युद्ध की आग फैलाना आज की सभ्यता के विकास की लाचारी है। हथियारों के मालिक विश्व के अघोषित तानाशाह बनेंगे जो क्रमशः कमजोर देश की आजादी को हथियारों से नष्ट कर या नष्ट होने के बाद पुनर्निर्माण के नाम पर अपने नियंत्रण में सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से ले लेंगे। यह विश्व साम्राज्यवाद या वैश्विक उपनिवेशवाद का एक नया रूप सामने आ रहा है। 18 वीं सदी में सीधे सैन्य शक्ति से कब्जा जमा कर गुलाम बनाना होता था फिर 20वीं सदी में, आर्थिक साम्राज्यवाद आया। इसका मुख्य हथियार विश्व व्यापार संगठन बना तथा उसके माध्यम से दुनिया को एक करने के नाम पर, बाजारों व उत्पाद केंद्रों पर कब्जा कर, देश की निर्वाचित सत्ताओं को, साहूकारी, गुलामी से गुलाम बनाया। इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड इसी का एक हिस्सा है और अब चुकी विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से, कमजोर और गरीब देशों को लूटने की चरम सीमा पार हो चुकी है गरीबी, कर्ज और भोग विलास में फंसा गरीब देश, एक ऐसे गरीब व्यक्ति का रूप ले चुका है जहां बस हड्डियों का कंकाल तो है पर मांस ,रक्त कुछ भी नहीं बचा है। अतः यह एक नए साम्राज्यवाद का अवतरण हुआ है नियोजित युद्ध और पुनर्निर्माण का साम्राज्यवाद। यूक्रेन, इजराइल, फिलिस्तीन, कालांतर में ताइवान आदि ऐसे ही युद्ध साम्राज्यवाद के शिकार होंगे। रूसी सैन्य खुफिया अब उन देशों में आगजनी व हिंसा की घटनायें प्रायोजित कर रही हैं, जो यूक्रेन के पक्ष में हैं। ब्रिटेन के लंदन के बाहरी इलाके में यूक्रेन को आपूर्ति करने वाली गोदाम में आगजनी की घटना के पीछे श्शगूर्य्य की भूमिका बताई जा रही है। पौलेंड, नार्वे, स्लोवाकिया ऐस्वेनिया में भी ऐसी ही घटनायें हुई हैं। याने युद्ध का दायरा फैल रहा है। रूस, चीन, उत्तरकोरिया भी एक धुरी बनी है और दूसरी तरफ अमेरिका-यूरोप और नाटो ये विश्व युद्ध के दो संभावित पक्ष बन रहे हैं। पर महत्वपूर्ण यह है कि क्या दुनिया के रंगीन व गरीब देश इस नये श्शिनयोजित युद्ध साम्राज्यवाय के खतरे को समझकर अपनी आजादी को, वास्तविक रूप में बचाने को तत्पर होंगे या फिर इस नयी गुलामी के शिकार बनेंगे।

भले ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपनी अज्ञानतावश या षड्यंत्रवश यह कहें कि महात्मा गांधी को दुनिया ने रिचर्ड एटेनबरो की फिल्म के बाद जाना, परंतु गांधीजी तो अपने जीवनकाल में ही 1909 में श्शिंद स्वराज्य के माध्यम से दुनिया को इस युद्ध-विलासी सभ्यता और हथियारों के प्रति, सावधान कर चुके थे। और इस खतरे को समझकर ही डॉ. लोहिया ने बालिग मताधिकार से निर्वाचित, विश्व संसद का सुझाव दिया था।

सरोकार

32 साल बाद 6 दोषियों को सजा, क्या यह न्याय है?

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के पूर्व अधिकारी हैं।

1992 में अजमेर के कॉलेज की 100 से ज्यादा लड़कियों के साथ सामूहिक दुष्कर्म और अश्लील फोटो सार्वजनिक होने पर देशभर में तहलका मचा था। अजमेर के विशेष न्यायालय ने हाल ही में 32 साल पुराने और देश के सबसे बड़े अश्लील फोटो ब्लैकमेल कांड में 6 और दोषियों को उम्रकैद की सजा सुनाई है। इस कांड में कुल 18 आरोपी थे। 4 आरोपियों को निचली अदालत ने उम्र कैद की सजा दी थी। लेकिन हाईकोर्ट ने उन्हें बरी कर दिया। 4 अन्य की सजा सुप्रीम कोर्ट ने उम्र कैद से घटाकर 10 साल कर दी थी। ये सभी रिहा हो चुके हैं। एक आरोपी ने आत्महत्या कर ली थी। दो आरोपियों पर कुकर्म का केस चला। एक फरार है। इस प्रकरण में 30 पीड़िताएँ रिकॉर्ड में दर्ज हुई थी। लेकिन अभी सिर्फ दो ही पीड़िताएँ कोर्ट में टिकी हुई है। यहाँ सवाल यह है कि 100 लड़कियों से सामूहिक दुष्कर्म के इस केस में 6 दोषियों को 32 साल बाद आजीवन कारावास मिला है ! 32 साल बाद मिला न्याय, क्या सही मायने में न्याय कहा जायेगा ?

अजमेर के इस बहुचर्चित दुष्कर्म प्रकरण में मास्टर माइंड में अजमेर यूथ कांग्रेस का तत्कालीन उपाध्यक्ष नफीस चिश्ती और संयुक्त सचिव सलीम चिश्ती भी था। इन्होंने बिजनेसमैन के बेटे से दोस्ती की और कॉलेज की लड़कियों के साथ सामूहिक कुकर्म किया। कुकर्म की तस्वीरें भी खींची। फिर उसे ब्लैकमेल कर उसकी गर्लफ्रेन्ड को पाल्ट्री फार्म ले गए। उसकी भी तस्वीरें खींची। फिर उस लड़की को ब्लैकमेल कर एक के बाद एक 100 लड़कियों को बुलाया और उनके साथ दुष्कर्म किया। आरोपियों ने फोटो रील प्रिंट के लिए कलर लैब पर दी थी। वहाँ कर्मचारियों की नियत बिगड़ी और प्रिंट सार्वजनिक कर दी। इस कारण से 6 लड़कियों ने आत्महत्या भी कर ली थी।

कॉलेज की 100 लड़कियों से सामूहिक दुष्कर्म की सजा का क्या हाल होता है ? वो ऊपर देख सकते हैं। अब इन 6 दोषियों को भी, जिन्हें 32 साल बाद आजीवन कारावास की सजा मिली है। पहले के दोषियों की तरह ये भी अपील में हाईकोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट जायेंगे।

इसमें और लंबा समय लगेगा और इन्हें दी गई सजा अभी नहीं मिल पायेगी ! यह अंतहीन प्रक्रिया है। कानून की गलियों का लाभ लेते हुए दोषी सजा में कमी कर लेते है या सजा से मुक्त हो जाते है। ऐसा ही यह कब तक चलेगा ? हाल ही में कोलकत्ता में ट्रेनी डॉक्टर से दुष्कर्म और हत्या का प्रकरण एक बार फिर चर्चित है। आरजी कर अस्पताल में एक महिला डॉक्टर की दुष्कर्म करने के बाद हत्या कर दी गई। यही नहीं इसकी एफआईआर भी 14 घंटे बाद लिखी गई। पीड़िता का शव 9 अगस्त को सुबह 9.30 मिला और एफआईआर 14 घंटे बाद रात 11.45 बजे दर्ज की गई। हाल ही में महाराष्ट्र में मुम्बई के पास ठाणे जिले के बदलापुर में दो बच्चियों के यौन शोषण के मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया है। यह घटना 12 और 13 अगस्त की होने के बावजूद इसकी रिपोर्ट 3 दिन बाद दर्ज की गई, वो भी तब जब लोग सड़क पर उतरे तो पुलिस जागी और एफआईआर दर्ज की।

हमारे देश में हर साल बलात्कार की 32 हजार से अधिक घटनाएँ होती है। और कई ऐसे प्रकरण होते हैं, जिसमें शिकायत ही दर्ज नहीं की जाती। किन्तु जिसमें शिकायत दर्ज होती है, उसके प्रकरण ऐसे ही सालों साल लम्बे चलने से पीड़ित को न्याय नहीं मिलता है।

बलात्कारियों को सही सजा इतिहास में सिर्फ एक महिला द्वारा दी गई थी। वह महिला थी फूलनदेवी, जिसने अपने साथ बलात्कार करने वाले 22 बलात्कारियों को एक लाईन में खड़ा करके सीने में गोली मार दी थी। ऐसों की ऐसी ही सजा होनी चाहिए ! यदि बलात्कारियों को सजा देने में इसी प्रकार से विलम्ब पर विलम्ब और तारीख पर तारीख लगती गई तो ऐसे ही दोषी न्याय की गलियों का लाभ लेकर जेल जाने से बचते रहेंगे। इसके लिए जरूरी है कि शीघ्र ही केन्द्र और राज्य सरकारें बलात्कारियों को सजा देने के मामले में सख्त नियम बनाएं और जरूरी होने पर नियमों में बदलाव भी करें। नियमों में बदलाव यह भी होना चाहिए कि निचली अदालत में जहाँ भी केस दर्ज होता है, वहाँ यह नियम बनाया जाए कि 1 साल के अंदर उस केस का निराकरण कर ही दिया जाए। अपील होने पर हाईकोर्ट में 6 माह में प्रकरण का निराकरण करने की समय सीमा तय की जानी चाहिए। इसी प्रकार सुप्रीम कोर्ट में प्रकरण दर्ज होने पर वहाँ भी अधिकतम 6 माह में निर्णय दिया जाना निश्चित किया जाए। जो न्यायाधीश समय सीमा में न्याय देने में चूकता हो, उसके विरूद्ध कार्रवाई की जानी चाहिए। इसके साथ ही ऐसे प्रकरण से संबंधित सभी पक्षों सरकारी वकीलों, आरोपियों के वकीलों, पुलिस आदि की भी जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए। राष्ट्रपति से अपील में जाने पर वहाँ अधिकतम 1 माह में ऐसे प्रकरणों का निराकरण किया जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। दुष्कर्म करने वाले और पीड़िता की हत्या करने वालों को केवल फाँसी की सजा होना चाहिए।

सख्त नियम बनाने और नियम में परिवर्तन करने के बाद ही यह उम्मीद की जा सकती है कि पीड़िता के साथ न्याय होगा। अजमेर ब्लैकमेल कांड की एक 68 वर्षीय पीड़िता ने 32 साल बाद मिले न्याय के संबंध में कहा है आरोपियों ने अनेक लड़कियों का जीवन बर्बाद किया। ऐसे दरिंदों को फाँसी से कम सजा नहीं दी जानी चाहिए थी। लंबे समय से वह परिजनों और समाज की जिल्लत झेलकर लड़ाई में डटी हुई है। पीड़िता की यह आस तभी पूरी होगी, जब नियमों को सख्त और उसमें बदलाव किया जायेगा। अन्यथा जैसा अभी चल रहा है, वैसा ही चलता रहेगा !

भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश हर युग में प्रासंगिक और प्रेरणादायी

ब्लॉग

डॉ. मोहन यादव

लेखक म.प्र. के मुख्यमंत्री हैं

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन दर्शन धर्म, जाति, व्यक्ति एवं लिंग से बहुत ऊपर है। लोक मान्यता है कि गुणातीत देवकीनंदन श्रीकृष्ण का अवतरण जन्माष्टमी के दिन हुआ। यह पावन संयोग है कि विष्णु जी के अष्टम अवतार श्रीकृष्ण माता देवकी के अष्टम पुत्र के रूप में अष्टमी तिथि को अवतरित हुए। जन्माष्टमी के पावन अवसर की प्रतीक्षा कर रहे भारत सहित दुनिया के कई देशों में बसे कृष्ण भक्तों में आनन्द और हर्षोल्लास है। द्वापर युग में आसुरी शक्तियों के अधर्म, अन्याय, पापाचार, अनाचार का प्रभाव चरम पर था। धर्म की रक्षा और अधर्मियों का नाश करने स्वयं भगवान को श्रीकृष्ण स्वरूप में पृथ्वी पर आना पड़ा। उन्होंने समस्त संसार को पाप, अधर्म, अत्याचार से मुक्त कर धर्म की संस्थापना की।

नन्हें कान्हा से योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण बनने की जीवन यात्रा में घनश्याम श्रीकृष्ण ने मनुष्य की भांति जीवन की अनेक बाधाएं, संघर्ष, दुःख, कष्ट, अपमान तथा पीड़ाओं को सह कर संसार को यह शिक्षा दी कि मनुष्य फल की इच्छा छोड़कर केवल अच्छे कर्म कर स्वयं पर विश्वास करें। योगेश्वर बनने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनके गुरु सांदीपनि जी का है, जिन्होंने प्रिय शिष्य कृष्ण को धर्म, भक्ति, ज्ञान, योग, वेद, शास्त्र, संगीत, शस्त्र, पुराणों, गुरु सेवा एवं गुरु दक्षिणा आदि विषयों की दुर्लभ शिक्षाएं प्रदान की।

गुरु दक्षिणा में भगवान श्रीकृष्ण ने महर्षि सांदीपनि जी एवं गुरूमाता को उनका खोया हुआ पुत्र पुण्डरक वापस लाकर दिया। हम सब परम सौभाग्यशाली हैं कि भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षा-दीक्षा के साथ उनके योगेश्वर बनने की गाथा मध्यप्रदेश में लिखी गई।

कंस वध के बाद भगवान श्रीकृष्ण अपने बड़े भ्राता बलराम के साथ मथुरा से शिक्षा प्राप्ति के लिए महर्षि सांदीपनि की शरण में उज्जैन आये थे। नारायण (उज्जैन) में उनकी मित्रता सुदामा से हुई। श्रीकृष्ण-सुदामा की मित्रता की मिसाल युग-युगांतर से है। भगवान श्रीकृष्ण से मित्रता की संसार को जो शिक्षा मिली, वह अनुकरणीय है। भगवान श्रीकृष्ण ने जिस जगह शिक्षा प्राप्त की थी, उनके गुरु सांदीपनि जी का आश्रम आज भी उज्जैन में विद्यमान है, जो भगवान श्रीकृष्ण के योगेश्वर बनने का साक्षात प्रमाण है। भगवान श्रीकृष्ण, सांदीपनि जी के गुरुकुल में 64 दिन रहे। इन 64 दिनों में 64 विद्या और 16 कलाओं का ज्ञान प्राप्त किया। चार दिन में 4 वेद, 18 दिन में 18 पुराण, 6 दिन में 6 शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया।

अपनी विनम्रता और श्रद्धा के कारण गुरु कृपा से भगवान श्रीकृष्ण को इन्दौर के समीप जानापाव में परशुराम जी से सुदर्शन चक्र रूपी अमोघ शस्त्र की प्राप्ति हुई। धार के पास अमझेरा में वीरता के बल पर रूक्मणी हरण में रूक्मी को हराया। बदनावर का ग्राम कोद वे पवित्र स्थान हैं, जो भगवान श्रीकृष्ण की पौराणिक जागृत लीलास्थली हैं। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि मध्यप्रदेश सरकार ने राम वन-पथ-गमन की तरह अब 'श्रीकृष्ण पाथेय' निर्माण का संकल्प लिया है। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश में जहां-जहां भगवान श्रीकृष्ण के चरण पड़े थे, उन्हें तीर्थ क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाएगा। इससे पूरी दुनिया को यह पता चलेगा कि भगवान श्रीकृष्ण का अटूट सम्बंध गोकुल, मथुरा, नंदगांव, वृंदावन और द्वारिका से ही नहीं बल्कि मध्यप्रदेश से भी है। विश्व के लोग यहां आकर इन तीर्थों का दर्शन कर पुण्य लाभ ले सकेंगे।

श्रीकृष्ण ने नारी सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। जनश्रुति है श्रीकृष्ण ने दैत्य नरकासुर का वध कर बन्दी बनाई गईं 16 हजार स्त्रियों को मुक्त कराया था। साथ ही कुटिल कौरवों के चीरहरण से द्रौपदी की रक्षा भी की। गोपाल श्रीकृष्ण गौ-माता को बहुत मानते थे। गौ-वंश उन्हें प्राणों से प्रिय रहा। गायों की रक्षा के प्रति हमारी सरकार भी प्रतिबद्ध है। इस दिशा में गौ-शालाओं के विकास के लिये विशेष प्रयास भी किये जा रहे हैं।

श्रीकृष्ण का आदर्श जीवन हर युग मे प्रासंगिक तथा प्रेरणादायी है। प्राणी उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुकरण कर महान बन सकता है। वर्तमान पीढ़ी को चाहिए कि वह भौतिकता की चमक-दमक में अपने पौराणिक इतिहास को विस्मृत न होने दे।

आईए हम सब प्रदेशवासी ऐसे महान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव-जन्माष्टमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाएं - जय श्री कृष्ण।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की काली रात...

मनमोहन हर्ष

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बाखबर! बमुलाहिजा!! होशियार!!! की वैधानिक चेतावनी की मुनादी संग हम आपको ठोक बजाकर ताकीद किए देते है कि 'हटकरजी' के हल्लो-गुल्लों को कहीं दिल से मत लगा बैठना। 'हटकरजी' जो कर गुजरते है या फिर मंडराती घटाओं के मध्य भी माहौल से 'किस्सों' को चुराकर गाहे-बगाहे 'किस्सागोई' की चादर तान देते है, वो हमारी नजर में केवल और केवल उनके 'बस का ही रोग' है। चादर तो क्या, हम तो कहेंगे कि ''हटकरजी' तो 'बातपोशी' का 'खूंटा गाड़ देने' में माहिर है। 'हटकरजी' जहां भी खांटी अंदाज में इसे गाड़ते है तो महफिल सज जाती है। फिर दूर तलक वे ही वे नजर आते हैं और जब हम जैसे निरीह और मजबूरन उनके मुरीद हो चले प्राणी उनकी चपेट में आते हैं तो फिर मौका ताड़कर 'हटकरजी' अपना खोटा सिक्का जमकर चलाते है। 'हटकरजी' की 'शान में कसीदे' पढ़ते-पढ़ते ये जो कुछ हम खरे में खोट पैदा करने जैसे उलजलूल शब्दों को काम में लेकर उनका 'नैरेटिव' बिगाड़ने का 'खेला' कर बैठते है, इसे हमारी काली करतूत ही समझना, बेचारे 'हटकरजी' का इसमें कोई दोष नहीं है, वे तो डंके की चोट पर 24 कैरेट सरीखे कमाल है। अब 'हटकरजी' जैसे खरे लोग जब खरी-खरी कहने लगते है तो आज के दौर में हम जैसे नुगरे उसे कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं। खाते भी 'हटकरजी' का है और उनकी ही थाली में छेद करने की गुस्ताखी भी करते रहते है। वैसे आप कहे तो हम इसको अपना दोष नहीं मानते हुए इसे 'जमाने का चलन' बताते हुए अपना 'पल्ला झाड़' ही लेते है। 'हटकरजी' के पुराण का नया अध्याय सुनाने से पहले उनके चरित्र चित्रण में हमेशा की तरह बहक गए। खैर मुद्दे पर लौटते हुए फिर आपको सावचेत किए देते है कि हम 'हटकरजी' द्वारा फिज्ञाओं में घोल दिए जाने वाले नित नवीन-नूतन रस और करतबों को जो करीने से आपके सामने पेश करने का प्रयास करते है, उसके चक्कर में कतई मत फंसना। उनको या उनके किस्सों के कैरेक्टर्स को कॉपी करने की कोशिश में 'लेने के देने' भी पड़ सकते है। मानसून की मेहरबानी के बीच महान किस्म के जुगाड़ू 'हटकरजी' अपने 'भ्राता जुगाडूलाल' का किस्सा बीनकर लाए है। 'हटकरजी' बताते है कि वीकेंड में बरसात की उस रात को तकरीबन दो-ढ़ाई बजे के आसपास मूसलाधार बारिश के बीच मौहल्ले में खड़ी किसी कार का अलार्म बार-बार चित्कार करते हुए सबकी चैन की निद्रा में खलल डाल रहा था। आसमां से टपकते बेहिसाब पानी की बौछारों से पनपने वाले कलरव और शोर को तो इस बार के मानसून में इग्नोर करते हुए वे नींद में 'चैन की बंशी बजाने' के आदि हो गए थे। मगर ये निगोड़े किसी कार के अलार्म ने उनकी 'नाक में दम' कर दिया था। कहीं कोई कॉलोनी से किसी कार को चुराने की हिमाकत तो नहीं कर रहा है, ये जानकर 'हटकरजी' अनमने से आंखे मलते निद्रारानी के आगोश से बमुश्किल निकले। बड़ी मशक्कत से अपनी ऐनक सम्भालकर जैसे-तैसे गली में पहुंचे।

उन्होंने मंजर देखा तो दंग रह गए। दूर खड़ी किसी कार के पास एक मानव अंधेरे में गले से छतरी लटकाए और एक हाथ में टॉर्च थामें कार से कई चीजों को निकालकर आस-पास के घरों की नालियों से बहते पानी के नीचे डाल रहा था। 'हटकरजी' ने उसे कोई शातिर चोर जानकर मुहल्ले के कुछ यार-दोस्तों को चुपके से फोन कर जगा दिया। फिर बसरती बारिष में 'हटकरजी' और उनके चार यार उस कार की तरफ बढ़े। 'हटकरजी' ने आव देखा न तांव और सबसे पहले आगे बढ़कर कार से किलोल करते उस शख्स को पीछे से कसकर पकड़कर चोर-चोर का शोर मचाने लगे। मगर ये क्या, वह कोई 'नकबजन' नहीं बल्कि गली-मुहल्ले और गांव-गुवाड़ में सुविख्यात 'भ्राता जुगाडूलाल' निकले। जो बाबा आदम के जमाने की अपनी आउटडेटेड और कई अरसे से खड़ी अपनी कार के पावदान, सीट और कई इंटीरियर को बारी-बारी से निकालकर बारिश में बहती नालियों के नीचे डालकर कार वांशिंग का अद्भुत जुगाड़ काली रात के साए में कर रहे थे। 'हटकरजी' बताते है कि 'भ्राता जुगाडूलाल' को सामने पाकर बारिश में पूरी तरह भीग चुके उनको और पड़ौसियों को सांप सूंघ गया। बकौल 'हटकरजी' जब 'भ्राता जुगाडूलाल' के सताए वे मुहल्ले के दोस्तों के साथ उलटे पांव घर लौटे। ठोढ़ी को हाथ पर टिकाते हुए 'हटकरजी' ने कहा कि आज भी जब उस घटना को याद करता हूं तो मन से बरबस ही यह गीत निकलता है कि 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की काली रात....' ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेष

अमित राव पवार

वे योगेश्वर श्री कृष्ण है

कोई मनुष्य अपना सब कुछ खोकर भी कैसे सुखी रह सकता है। यहां श्रीकृष्ण हमें सिखाते हैं कि मनुष्य जीवन में कर्म करे फल विधाता के हाथों देना है। कृष्ण का तो जन्म ही बुराइयों का अंत करने के लिए हुआ पर अवतार होने पर भी कष्ट,दुख उन्हें सहना पड़े। चाहते तो महाभारत का युद्ध कुछ ही क्षण में समाप्त कर देते लेकिन उन्होंने वहां भी अपनी भूमिका सुनिश्चित की और बिना हथियार उठाये अर्जुन का सारथी बनना तय किया, जबकि वे स्वयं द्वारिका के राजा थे।

सतयुग,त्रेतायुग,द्वापरयुग यह बात चरितार्थ साबित हुई कि,जब-जब धर्म की हानि और संसार में अत्याचार बढ़ेगा,तब-तब मेरा जन्म होगा। 'भगवान श्री कृष्ण द्वारा कही गई इस बात को हम हर एक युग में देख सकते हैं।' कहा जाता है,कलयुग में श्री कल्कि अवतार होना शेष है। द्वापरयुग में भगवान विष्णु के दसवें अवतार में से आठवें रूप श्रीकृष्ण भाद्रपद मास कृष्णपक्ष की अष्ठमी को तेज बारिश की रात 12 बजे मथुरा के कारागार में माता देवकी और पिता वासुदेव के यहां जन्म हुआ।भगवान ने मनुष्य जीवन मे जब-जब जन्म लिए उन्हें कष्ट भी सहने पड़े। भगवान श्री कृष्ण का जन्म लेते ही तुरंत अपने जन्म देने वाले माता- पिता से दूर लालन-पालन,पोषण और सुरक्षा की दृष्टि से गोकुल में यशोदा और नंदबाबा के यहां जाना पड़ा। आज परिस्थिति कैसी भी हो कोई भी मनुष्य अपनी संतान को जन्म के तुरंत बाद किसी ओर के पास नहीं छोड़ सकता। यह बड़ा प्रश्न भगवान श्री कृष्ण के जीवन के पहले दुख व कष्ट का जो जन्म देने वाले अपने माता-पिता से कई वर्षो तक दूर रहे।

बाल्यकाल की अवस्था में ही अपने मामा कंस द्वारा भेजी गई, राक्षसी पूतना का आमना-सामना कर वध किया। बालपन में जाते हैं, तो यशोदा माँ अपने कन्हैया के लिए चिंतित दिखाई देती है जो मित्रों संग खेलते-खेलते अपनी गेंद कालिया नाग के पास दे देते हैं। फिर उससे सामना करना और विजय होना व अपनी गेंद वापस लाकर मित्रों को देना यह भी श्री कृष्ण के जीवन का संकट ही था,जबकि बच्चों को हम छिपकली से भी दूर रखते हैं। थोड़ा और आगे चले गोपियों संग मित्रता और माखनचोरी से खाना इसको दुनिया ने बहुत गलत तरह से प्रसारित किया। आज भी अनेकों धारावाहिक टेलीविजन पर इसे वास्तविकता से परे बताया जाता है। अनेकों लोग खासतौर पर आज की युवा पीढ़ी उनके इस भाव से अनजान है। गोपियां तथा माखन इन्हें अतिप्रिय क्यों, इसका आश्रय यह हुआ कि बालवस्थ में सभी का चेहरा मनमोहक व आकर्षित ही होता है, इसलिए महिलाये-पुरुष बड़े सभी उस बालपन की अवस्था मे स्नेह और प्यार करते है। यही अर्थ हुआ गोपियों संग कान्हा के खेलने का,दूसरा माखन उन्हें बहुत प्रिय, जो व्यंजन हमे पसंद आते है हम वही अधिक खाते तथा यह भी ध्यान रखते है कि, हमसे कोई मनपसंद व्यंजन मांग न ले। पूरे गांव में पता था कि,कन्हैया को माखन पंसद है।अंत वे अपना माखन

किसी को नही देते स्वयं मजे लेकर छुपाकर खाते। अपने प्रिय माखन, गोपिया, मित्रों और प्रेम रूपी राधा को भी छोड़ कर एक दिन गोकुल से वे विदा लेते है। और फिर शायद कभी अपने मूल स्थान पर लौट कर नही आते।आज हम मूल स्थान से पेशे के लिए कही जाते है,तो हमे घर की याद और बचपन दिखाई पड़ता है। कितना कष्ट,बचपन की सभी यादे छोड़ अगले गंतव्य की और जब श्रीकृष्ण बढ़ते है। यहां भी उन्हें कष्ट ही सहना पड़ा मनुष्य अपने प्रेम,मित्रों ओर प्रिय भोजन से दूर होकर शायद ही सुखी रह पाए यह विचारणीय पहलू कृष्ण के जीवन का हमे दिखाई पड़ता है। इतना ही नही फिर अपने मामा का वध,आगे महाभारत में धर्म की पुनः स्थापना करने के लिए संघर्ष,युद्ध के मैदान से ही इस संसार को जीवन जीने की ऊर्जा प्रदान करते हुए अर्जुन को कुरुक्षेत्र में मार्गदर्शन देना। फिर आपस की अंतर्कलह को देखना, इतना सब खोकर भी आज के परिवेश में समाज उनको क्या सिर्फ और सिर्फ गोपियों संग रासरचाने वाला ही समझते हैं?

कोई मनुष्य अपना सब कुछ खोकर भी कैसे सुखी रह सकता है। यहां श्रीकृष्ण हमे सीखाते है कि मनुष्य जीवन मे कर्म करे फल विधाता के हाथों देना है। कृष्ण का तो जन्म ही बुराइयों का अंत करने के लिए हुआ पर अवतार होने पर भी कष्ट,दुख उन्हे सहना पड़े। चाहते तो महाभारत का युद्ध कुछ ही क्षण में समाप्त कर देते लेकिन उन्होंने वहां भी अपनी भूमिका सुनिश्चित की और बिना हथियार उठाये अर्जुन का सारथी बनना तय किया,जबकि वे स्वयं द्वारिका के राजा थे।यहाँ भी वे सिखा रहे, कर्म बड़ा या छोटा नही होता बस हमारी भूमिका का निर्वाह ईमानदारी से तथा समाज व लोककल्याण के लिए होना चाहिए।आज टेलीविजन, फ़िल्म, साधु-संत,महात्मा उपदेश देने वाले लोगो में समाज के कुछनेक लोग उन्हें गलत तरीके से पेश करते नजर आते हैं उन्होंने तो स्वयं युद्ध के क्षेत्र में अर्जुन को पाठ पढ़ाया और कहा कर्म करो फल तुम्हारे हाथ में नहीं। वर्तमान में लोग खासकर युवा पीढ़ी उनके कुछ ही हिस्से को देख पा रहे हैं। उन्होंने भी मनुष्य जीवन लिया और इतना कुछ दुःख दर्द सहें। वे योगेश्वर श्रीकृष्ण है,जो हम मनुष्य को मैनेजमेंट अथवा जीवन जीने की कला सीखा रहे है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेष

डॉ. गरिमा संजय दुबे

कृष्ण को बिसराती मानवता

कृष्ण का आकर्षण इतना अधिक है कि हर वर्ष मंदिरों में जो अनुष्ठान होते हैं वह तो हैं ही, मन के भी तो कुछ अनुष्ठान होते हैं न, उनकी मूर्ति का शृंगार जो होता है वह होता ही है, मन का भी तो कोई शृंगार होता है न, उनकी आराधना के गीत संगीत नृत्य होते हैं लेकिन मन का भी तो कोई संगीत होता है ना, उनकी सोलह कलाओं की बात होती होगी, मन की भी तो कोई कला होती है ना, मन और चंद्रमा की कलाओं में एक साम्य होता है, घटती बढ़ती रहती हैं, हर भाव के घटने बढ़ने के संबंध यूं भी चंद्रमा से ही है। लेकिन सोलह कलाओं से पूर्ण कृष्ण ने क्षीण कला रात्रि क्यों चुनी भला, कृष्ण है ना हर कार्य उल्टा ही करेंगें,

भारतीय वांग्मय के दो प्रमुख देवताओं ने पूर्णिमा या अमावस्या नहीं चुनी, चुनी तो अष्टमी और नवमी, एक ने कृष्ण पक्ष की दूजे ने शुक्ल पक्ष की, चुनी मध्यमा तिथि, न पूर्ण प्रकाश, न पूर्ण अंधकार। वस्तुतः दोनों ही स्थितियां भ्रमित कर सकती हैं, पूर्ण प्रकाश भी, पूर्ण अंधकार भी। इसलिए पूर्णिमा अमावस्या का चयन नहीं हुआ । पूर्ण प्रकाश में अपने ही प्रकाश से मुग्ध हो गति खो जाने का भय है, अपनी ही कांति पर मोहित हो लक्ष्य से भ्रष्ट होने की आशंका, अपने ऊपर अभिमान का भी भय। पूर्ण अंधकार में भ्रमित हो राह भटकने की चिंता, इसलिए मध्यमा तिथियां, जिसमें थोड़ा प्रकाश है, थोड़ा अंधकार, थोड़े उपलब्ध प्रकाश के लिए एक कृतज्ञता है और थोड़े के लिए प्रयास है, पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ का गीत गाने वाले कृष्ण, कृष्ण ने कभी नहीं कहां अपने कार्य में कमी करके मेरा ध्यान करो, उन्होंने कहा जो कर्म करो मेरा कार्य समझ कर करो, जब कभी किसी कृष्ण भक्त को अपने कार्य से विमुख हो ध्यान पूजन में लगे देखती हूं तो लगता है इन्होंने कृष्ण को कितना कम जाना है । यूं भी कृष्ण को पूरा पूरा जनाना और पूरा पूरा पाना संभव भी नहीं। तो अष्टमी तिथि, पूर्ण कला युक्त, अष्ट सिद्धियों के साथ जन्म लेने वाले कृष्ण के अनंत रूप हैं। आस्तिकों के लिए तो आनंद का स्त्रोत हैं ही, नास्तिकों के लिए भी कम आकर्षण नहीं है वहां, वे कृष्ण को चकित हो देखते हैं, जिज्ञासु हो पढ़ते हैं, और उस दर्शन से अभिभूत होते हैं, किंतु अपने अहंकार में उसके प्रभाव को नकारते हैं। मैं तो कहती हूं ईश्वर का ध्यान आस्तिकों से अधिक नास्तिकों के मन में रहता है। क्योंकि नकारने के लिए प्रयत्न अधिक करना पड़ते हैं, नास्तिक बहुत पुरुषार्थ करते हैं और प्रकारांतर से कृष्ण के प्रिय हो जाते हैं। कृष्ण गोपियों से अधिक नास्तिकों को छकाते हैं, कृष्ण आस्तिकों से अधिक नास्तिकों के मन में

निवास करते हैं। वे कृष्ण हैं जिनके आकर्षण से कोई बचा नहीं। कौन सी जिव्हा उनका गान करने में समर्थ है, कोई नहीं । वे अनंत हैं।

कृष्ण पर हर वर्ष एक लेख लिखने का एक अनुष्ठान सा है, यह कृष्ण की भक्ति का लालच ही नहीं अपने मन के बहुत से विक्षोभ को शांत करने का जतन भी है। अध्यात्म निश्चित ही बहुत से विचलन से बचा लेता है मन को, एक धैर्य, दृढ़ता, साहस तो देता ही है, यह मेरा निजी अनुभव है। किसी भी रूप में या बिना रूप के भी, सगुण हो या निर्गुण एक अवलम्ब तो जीवन को चाहिए। निर्गुण तक आपकी चेतना यात्रा कर सके तो उससे श्रेष्ठ तो कुछ नहीं, किंतु वहां तक न पहुंच सके तो क्या यात्रा प्रारंभ ही न करें, सगुण से चलें, उसमें भी क्या बुराई, किंतु शर्त केवल एक ही होनी चाहिए कर्मकांड तक ही सीमित न रहकर उससे आगे के पड़ाव की चेष्टा हो, फिर कोई भी विग्रह, कोई भी धर्म में कोई भेद नहीं रह जाता। यदि वह भी नहीं तो एक नियम से किसी के प्रति आस्था का निवेश भी मन की बहुत सी परेशानियों का हल तो देता ही है अध्यात्म।

कभी कभी सोचती हूं जो कृष्ण न होते तो क्या होता, उनके प्रबंधन, कूटनीति, गीता ज्ञान, उनकी लीलाओं, पुरुषार्थ और अन्य विषयों पर बहुत कुछ कहा गया, लिखा गया, किंतु वे इतने विस्तृत हैं कि जब भी कुछ विचार करें तो एक नया विचार हाथ में थमा देते हैं। आज जब कृष्ण पर लिख रही हूं तो लगा, कृष्ण को युगांधर, सुदर्शन, मुरली से चिन्हित करने वाले हम, कभी सोचें की कृष्ण के न होने से सबसे बड़ी हानि क्या होती। मेरे मन से तो यह ध्वनि आती है कि जो कृष्ण न होते तो कला और प्रेम से वंचित रह जाता यह संसार। कलावंत कृष्ण मुझे अधिक सुहाते हैं, वे न होते तो यह संसार प्रेम, संगीत, नृत्य, रास, काम के विधयेक स्वरूप से वंचित ही रह जाता। जिसकी तर्जनी पर सुदर्शन हो, वह शांति के लिए किस सीमा तक लालायित रहता है कि शत्रु से प्राप्त अपमान भी सहन कर लेता है । वह योगेश्वर मान अपमान से परे रहकर ही तो मानव कल्याण की बात करता है। शक्ति संपन्न को कैसे अपनी शक्ति का प्रयोग विश्व शांति के लिए करना चाहिए यह कृष्ण से बेहतर कौन बता सका भला। वृंदावन, मथुरा की गलियों में प्रेम के सात्विक रूप का प्रदर्शन करने वाला वही तो था, प्रेम को ज्ञान से ऊपर रखने वाला भी वही, उद्धव जैसे ज्ञानी को प्रेमी बना देने वाला भी वही। जब मुरली छोड़कर सुदर्शन थामा तो हर प्रकार के अन्याय का प्रतिकार किया, स्त्री के उद्धार करने में यह नहीं देखा कि एक राजरानी द्रोपदी ने पुकारा है, दूजी ओर सोलह हज़ार वंचित कन्याओं ने, न क्षेत्र देखा, न पद देखा, न जाति देखी केवल यह देखा कि स्त्री की गरिमा का हनन हुआ है तो पहुंच गए, कभी रुक्मणि के पास, कभी सत्यभामा के लिए, कभी कुब्जा की पुकार पर, भेद कहां । भेद तो संसार की दृष्टि में है, कृष्ण में नहीं ।

धीर, वीर, पूर्ण पुरुष, स्त्री के मनोभावों को श्रेष्ठ रूप में समझने वाला कोमलकांत प्रेमी, सखा और कौन।

कृष्ण के दर्शन में हर प्रश्न का उत्तर है। एक विचार कहता है ईश्वर ने मनुष्य को नहीं रचा, मनुष्य ने अपनी सुविधा से ईश्वर को रचा है । ठीक एक बार को यह मान भी लिया जाए कि ईश्वर कल्पना है, सारे ग्रंथ भी कल्पना है तो भी इतनी सुंदर कल्पना करने वाली संस्कृति कैसी रही होगी,

कितना सुंदर मन होगा जो ऐसा ईश्वर रच सका, कैसी दिव्य दृष्टि रही होगी जो मानव कल्याण के ऐसे स्वर निकले, कैसे उदार मना शांति के पुजारी ऋषि रहे होंगें जिन्होंने सृजन के सुंदर गीत गाए, कैसी उच्च चेतना रही होगी जिसने परम तत्व के साक्षात्कार के मंत्र रचे ।

वो एक गीत है ना,

जिसकी रचना इतनी सुंदर वो कितना सुंदर होगा,

तनिक सोच कर देखें, जिसने ऐसा सुंदर ईश्वर, दर्शन, ज्ञान, रीति, परंपरा रची उसे रचने वाला क्या स्वयं श्री कृष्ण से कम सुंदर होगा । वह कोई भी हो श्री कृष्ण ही होगा।

अच्छी बातें मंत्र की तरह दोहराई जानी चाहिए, सिद्ध हो जाती हैं, बार बार कहती हूं, जो संस्कृति, सभ्यता जैसा होना चाहती है वैसा ही सबकुछ रचती है, अब देख लें किसने क्या होना चाहा था,

क्या रचा,

क्या हो गए हैं यह भी देखें, कृष्ण का संसार इतना सुंदर है कि वहां कुछ भी सौंदर्य रहित नहीं है,

युद्ध भी सौंदर्य है, नृत्य, कला, प्रेम, संगीत तो है ही। न्याय का सौंदर्य है, केवल और केवल कृष्ण ही प्रकृति के न्याय की व्याख्या करते हैं, वे किसी सही गलत के भेद में नहीं है, पापी के साथ छल को लेकर कोई दुविधा नहीं है वहां, बुरे कर्म का फल बुरा ही होगा यह घोषणा करते हैं, मनुष्य फिर और किसी की शरण कैसे गहे, उसे अपने प्रश्नों के उत्तर केवल कृष्ण से ही मिलते हैं।

इतने न्यायप्रिय कि स्वयं के वंश के विनाश की लीला रचने में संकोच नहीं करते, इतने निर्लिप्त कि सारे संसार में लिप्त दिखाई देने वाले कृष्ण एकांत में अपनी लीला संवरण कर लेते हैं, प्रभास क्षेत्र में, जो उनकी सुगंध से अब तक सुवासित है।

अब इस विवाद में कौन पड़े कि कृष्ण ने मानव को रचा है या मानव ने कृष्ण को। मान लेने में थोड़ा परिश्रम कम करना पड़ता है, जानने में अधिक, जो जानने की चेष्टा कर रहे हैं वे ज्ञानी हैं, जिन्होंने मान लिया वे भक्त हैं, कोई कर्म से उन्हें जानना चाहता हैं। ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, राज योग किसी मार्ग से चलें अंततः पहुंचते एक ही जगह हैं, तो किसे बड़ा माने, किसे छोटा, यह व्यर्थ का प्रलाप है।

जो श्री कृष्ण को अनन्य भाव से भजते हैं, किसी भी मार्ग से चलने वाले में भेद नहीं देखते । उनमें सबसे पहले बड़े छोटे, मान अपमान, श्रेष्ठ सामान्य का भेद समाप्त होता है । मैं बड़ा ज्ञान योगी हूं, यह भक्ति योग से जा रहा है, यह मार्ग ठीक नहीं है, मेरा ही मार्ग श्रेष्ठ है, सोचने वाला अभी कृष्ण का 'क' भी नहीं जान पाया है। और अपने को श्रेष्ठ साबित करके प्राप्त क्या होना है, केवल अहंकार ही पुष्ट होगा । कृष्ण को पाने के लिए पहले तो अपने अहंकार को त्यागना होगा, वही प्रथम और अंतिम विकल्प है ।

जो कृष्ण ने होते तो कलाओं का अस्तित्व नहीं होता, जो कृष्ण न होते तो शृंगार और सौंदर्य से वंचित रहता संसार, जो कृष्ण न होते तो दर्शन की गंभीरता से रहित होता संसार, जो कृष्ण न होते तो आनंद की परिभाषा से अनभिज्ञ रहता संसार । श्री कृष्ण आनंद का पर्याय हैं, उनके किसी भी रूप की आराधना की फल प्राप्ति आनंद है ।

अत्यधिक पीड़ित मानवता के इस रुग्ण समय में श्री कृष्ण का दर्शन ही एकमात्र आश्रय है। श्री कृष्ण हर युग में प्रासंगिक रहेंगे, जब जब उन्हें जानने की चेष्टा करेगा संसार, तब तब अपने उद्धार को प्रस्तुत होगा। किंतु वर्तमान समय में, इस युद्धकाल में जब हर कहीं युद्ध का परिदृश्य है अर्जुन तो बहुत दिखाई देते हैं, किंतु श्री कृष्ण कहीं दिखाई नहीं देते । हर क्षेत्र कुरुक्षेत्र है, मन से लेकर मैदान तक, तब लगता है सुदर्शन की नहीं, मुरली की तान की आवश्यकता अधिक है, जो प्रेम होगा तो युद्ध हो ही नहीं सकता। जो संगीत होगा तो द्वंद होगा ही नहीं।

दो ऐसे व्यक्तित्व, दो ऐसे तत्व जिनकी कमी इस युग में बड़ी खलती है, एक श्री कृष्ण और दूसरे विदुर ।

इस भयावह कुरुक्षेत्र में दोनों की अनुपस्थिति विनाशकारी है। क्या श्री कृष्ण ने हमे बिसरा दिया है, नहीं वह तो हैं ही, नित्य प्रज्ञा, नित्य आनंद । हमारी ही दृष्टि धुंधली हो गई है जो उन्हें देख नहीं पा रही है । कृष्ण का होना तो शाश्वत सत्य है, उन्हें देख नहीं पाना, उनसे प्रेरणा न ले पाना वर्तमान समय की सबसे बड़ी विडंबना।

उत्सव, भक्ति भाव तो खूब हो रहे हैं किंतु क्या आत्मसात भी किया जा रहा है कृष्ण दर्शन ? श्री कृष्ण का हाथ छोड़ने का अर्थ है जैसे इस वृहत संसार रूपी मेले में अबोध, निश्छल शिशु का खो जाना। मानवता रूपी शिशु, हिंसा रूपी मेले में भटक रहा है। वर्तमान समय में मानवता भ्रम, भय, संशय से ग्रसित है, क्योंकि उसने श्रीकृष्ण को, उनके दर्शन के वास्तविक स्वरूप को बिसरा दिया है। श्रीकृष्ण, उस तत्व का आह्वान कोई तो करे जो पीड़ित मानवता के घाव पर प्रेम रूपी, शांति रूपी, ज्ञान रूपी औषधि का लेप लगा सके।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

भगवान के अवतार का सिद्धांत

गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीराम चरित मानस' में कहा है, 'जब जब होइ धरम की हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी, तब तब धरि प्रभु विविध सरीरा, हरहिं दयानिधि सज्जन पीरा'। अर्थात् जब जब पृथ्वी पर धर्म नष्ट होने लगता है, अधर्मी, अभिमानी असुर बढ़ने लगते हैं, तब तब भगवान सज्जनों के कष्टों को दूर करने के लिए आवश्यकतानुसार विविध रूपों में अवतरित होते हैं।

आसुरी शक्तियों के अत्याचार जब इतने बढ़ जाते हैं कि मनुष्य के लिए उन्हें रोक पाना संभव नहीं होता तब धर्म की स्थापना के लिए ईश्वर अवतार ग्रहण करते हैं और दुष्टों का संहार करते हैं।

श्रीमद्भागवत गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं-

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

भावार्थ यह है कि मैं अजन्मा और अविनाशीस्वरूप होते हुए भी तथा समस्त जीवों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन करके अपनी योगमाया से प्रकट होता हूँ हे भारत! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार स्वरूप में लोगों के समक्ष प्रकट होता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार, पापियों का विनाश और धर्म की स्थापना करने के लिए मैं हर युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

श्रीमद्भागवत महापुराण में शुकदेव जी राजा परीक्षित से कहते हैं-

नृणां निःश्रेयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप।
अव्ययस्याप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः॥

अर्थात् राजन! यथार्थ में भगवान प्रकृति संबंधी वृद्धि-विनाश, प्रमाण-प्रमेय और गुण-गुणी भाव से रहित हैं। वे अचिन्त्य अनन्त अप्राकृत परम कल्याणस्वरूप गुणों के एकमात्र आश्रय हैं। उन्होंने स्वयं को तथा अपनी लीला को प्रकट किया है ताकि जीव उसके सहारे अपना परम कल्याण संपादित करें।

महर्षि अरविंद समझाते हैं कि 'अवतार' शब्द का अर्थ है उतरना। यह भगवान का उस रेखा के नीचे उतर आना है, जो भगवान को मानव-जगत या मानव अवस्था से पृथक करती है। श्रीमाँ बताती हैं कि जब परात्पर ईश्वर किसी विशेष कारण से हमारी धरा पर अभिव्यक्त होने का निर्णय करते हैं और एक भौतिक शरीर ग्रहण करते हैं तो उसे अवतार कहा जाता है।

सनातन धर्म में परमात्मा के अवतार ग्रहण करने को लेकर सभी संतों, महापुरुषों के विचारों में समानता है। वे सृष्टि के नियंता को विशेष प्रयोजन से पृथ्वी पर विभिन्न स्वरूपों में अवतरित होने के सिद्धांत पर एकमत हैं। अवतारवाद के सिद्धांत को समझाने में उनकी भाषा में सूक्ष्म भिन्नता प्रतीत हो सकती है परंतु निष्कर्ष में भेद नहीं है। सभी प्रमुख देवी-देवताओं के अवतारों का वर्णन मिल जाता है।

विद्वज्जन अवतारवाद को विकासवाद से जोड़कर भी देखते हैं। जल में जीवन की उत्पत्ति से लेकर पूर्ण मानव तक की विकास यात्रा को मत्स्यावतार, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम और कृष्ण के आगे कल्कि अवतार तक ले जाया गया है। भगवान के अवतारों को अंशावतार, आवेशावतार, लीलावतार, पूर्णावतार जैसी श्रेणियों में विभाजित किया गया। चंद्रमा अमावस्या से पूर्णिमा तिथि तक सोलह दिनों में अपनी पूर्ण आभा को प्राप्त कर लेता है। संभवतः इसी से प्रेरित सोलह कलाओं को संपूर्णता का प्रतीक मानकर श्रीकृष्ण को सोलह कलाओं के साथ पूर्णावतार माना जाता है। आदि शंकराचार्य अंशावतार तथा मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन आदि लीलावतार हैं। श्रीराम पूर्णावतार हैं।

परमात्मा निर्गुण, निराकार है। वह अवतार लेकर सगुण और साकार कैसे हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर सनातन धर्म के ग्रंथों में पर्याप्त विस्तार सहित अनेक स्थानों पर तर्कसंगतता के साथ दिया गया है। तुलसी बाबा कहते हैं कि निर्गुण और सगुण ब्रह्म में कोई भेद नहीं है जैसे कि पानी और बर्फ में कोई अंतर नहीं होता, केवल स्वरूप बदल जाता है।

यह सृष्टि परमेश्वर की क्रियाशक्ति कहलानेवाली माया या प्रकृति का आभासी विस्तार है। परमात्मा प्रत्येक प्राणी में अविनाशी आत्मा के रूप में स्थित होता है। जीव की चेतना शक्ति का स्रोत यही आत्मा है। संसार में शक्ति के अच्छे और बुरे संस्करण पाए जाते हैं। जब बुराइयाँ इतनी प्रबल हो उठती हैं कि अच्छाई के अस्तित्व के समाप्त हो जाने का संकट उपस्थित हो जाता है, तब एक अलौकिक शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। यह पराशक्ति बुराई का विनाश कर अच्छाई को पुनर्स्थापित करती है। यही सृष्टि की समस्त शक्तियों के मूलकारण भगवान के अवतरित होने का सिद्धांत है।

भगवान के अवतार कल्पनामात्र नहीं हैं। संसार में बुराई का अंत और अच्छाई की विजय होते देखी जाती है। महान प्रतापी रावण का भी अंत हुआ।

धैर्यपूर्वक धर्म का त्याग न करनेवाले बड़े से बड़े संकट से उबर जाते हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी आशा के साथ सन्मार्ग पर अविचलित भाव से डटे रहने की शक्ति ही ईश्वर के आशीर्वाद का हृदय में अवतरण है। संकट की विकरालता अलौकिक शक्ति के अवतरण का ढंग तय करती है। अंतःकरण में विराजमान सत् के पुंज ईश्वर की शरण में रहते हुए मन, वचन और कर्म से उसके द्वारा चेतना के माध्यम से दिए गए मार्गदर्शन का अनुसरण करना हमेशा श्रेयस्कर होता है।

नन्हें बालगोपालों ने रची श्रीकृष्ण रासलीला, वेशभूषा और मटकी फोड़ के साथ धूमधाम से मनाई जन्माष्टमी

राधा-कृष्ण और बलराम के रूप में नन्हे-मुन्ने बने आकर्षण का केंद्र, नंद उत्सव का हुआ भव्य आयोजन

बैतूल। पूरे जिले में सोमवार 26 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व को मनाने के लिए जबरदस्त उत्साह देखा जा रहा है। इसको लेकर सभी संस्थानों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन के काफी पहले से ही जोर-शोर से तैयारियां शुरू हो गई थी। गौरतलब है कि इस बार मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदेश के सभी शासकीय/अशासकीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर भारतीय विशिष्ट परम्पराओं एवं श्रीकृष्ण रासलीला पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश भी दिए गए थे। इसी तारतम्य में शहर के प्रतिष्ठित सीबीएससी स्कूल सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल में भी जन्माष्टमी का पर्व बड़े ही धूमधाम और जोश-उत्साह के साथ मनाया गया। स्कूल में नंद उत्सव के आयोजन के अंतर्गत बच्चों ने राधा-कृष्ण की वेशभूषा धर श्रीकृष्ण रासलीला रची और मटकी फोड़ प्रतियोगिता में भी भाग लिया। इस अवसर पर स्कूल के क्लास सेकंड के छात्र-छात्रा श्रेयांश द्विवेदी एवं हिमानी पंडाग्रे ने राधा-कृष्ण की वेशभूषा धर अपनी मासूमियत के साथ श्रीकृष्ण रासलीला का मंचन किया। जिनको उपस्थित सभी लोगों ने खूब सराहा। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को स्कूल प्रबंधन द्वारा उपहार देकर भी सम्मानित किया गया। इस दौरान स्कूल के शिक्षकों द्वारा श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का जीवन चरित्र भी बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अंत में स्कूल प्रबंधन एवं स्टाफ द्वारा आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी अभिभावकों के सहयोग की प्रशंसा कर आभार व्यक्त किया गया।

आज मनाया जाएगा बीजासनी मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

51 किलो मिठाई , 11 किलो माखन मिश्री व पंजरी का लगेगा भोग

विशाल भजन संध्या रात्रि 8 बजे से, श्रीराधाकृष्ण व लड्डू गोपाल की सजी सुंदर झांकी

बैतूल। गंज सब्जी मंडी स्थित बीजासनी माता मंदिर में आज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया जाएगा। इस अवसर पर विशाल भजन संध्या का आयोजन मंदिर समिति द्वारा किया गया है जो रात्रि 8 बजे प्रारंभ होगा तथा रात्रि 12 बजे तक धर्मप्रेमी भगवान कृष्ण के सुंदर भजनों का आनंद ले सकेंगे। रात्रि 12 बजे भगवान के जन्म के साथ ही आरती होगी तथा 51 किलो मिठाई, 11 किलो माखन मिश्री तथा पंजरी आदि का भोग लगाया जाएगा तथा भोग लगाने के बाद प्रसाद का वितरण सभी उपस्थित धर्मप्रेमियों में किया जाएगा। मंदिर समिति के अध्यक्ष एवं बीजासनी मंदिर के संस्थापक दीपक शर्मा ने बताया कि इस मंदिर से देश विदेश के कई स्थानों से श्रद्धालु जुड़े हुए हैं, यहां से असंख्य भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं तथा यह मंदिर माता की एक सिद्धपीठ बन चुका है। उन्होंने मंदिर समिति की ओर से जिले के सभी धर्मप्रेमियों से इस कार्यक्रम में सपरिवार उपस्थित होने का आग्रह किया है।

जिले में झमाझम बारिश, खोलने पड़े डैमों के सब गेट

बैतूल। बीती रात जिले के अधिकांश हिस्सों में भारी बारिश हुई। हाल ही में एक्टिव हुए एक नए सिस्टम के कारण भारी बारिश की स्थिति बनने की बात कही जा रही है। भारी बारिश से जिले के तमाम बड़े डैमों के गेट खोलने पड़े। इधर अगले 24 घंटे के दौरान भी भारी बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग से मिली जानकारी के मुताबिक एक नया सिस्टम बनने के कारण मानसून फिर से सक्रिय हो गया है। जिसके कारण जिले में एक बार फिर तेज बारिश का दौर शुरु हो गया है। शनिवार की शाम और रात को जिले के सभी ब्लॉकों में झमाझम बारिश हुई है। जिला मुख्यालय बैतूल पर तो रात भर तेज बारिश होती रही। झमाझम हो रही बारिश से बारिश का कोटा अब तेजी से पूरा होने लगा है। इसी तरह से बारिश का दौर जारी रहा तो जल्द ही औसत बारिश का आंकड़ा पार हो जाएगा। शनिवार शाम और रात को हुई बारिश से कई जगह जलभराव की स्थिति निर्मित हो गई। बारिश होते ही सड़कों पर पानी बारिश जमा होने से ताल-तलैया की स्थिति निर्मित हो गई थी।

भीमपुर ब्लॉक में औसत बारिश का कोटा पूरा-शनिवार को बारिश होने के बाद बैतूल जिले के भीमपुर ब्लॉक में बारिश का कोटा पूरा हो चुका है। भीमपुर में अब तक 43 इंच बारिश हो चुकी हैं। अब तक जिले में कुल 841.7 यानी 33.66 इंच बारिश हो चुकी हैं। अब औसत बारिश के लिए 9.50 इंच बारिश की दरकार है। शनिवार शाम से लेकर रविवार सुबह 8 बजे तक बैतूल में 32.8 मिमी, घोड़ाडोंगरी 73.0, चिचोली 84.0, शाहपुर 75.0, मुलताई 23.0, पट्टन 44.0, आमला 10.0, भैंसदेही 59.0, आठनेर 16.0, भीमपुर में 94.0 मिमी बारिश दर्ज की गई है।सारनी क्षेत्र में पहाड़ी क्षेत्रों में रात भर हुई मूसलाधार बारिश के बाद देर रात सतपुड़ा डेम भीषण बाढ़ आ गई। जलाशय का लेवल तेजी से बढ़ता देख एक एक कर डैम के 7 गेट 10 फीट तक खोलने पड़ गए। इस दौरान तवा

नदी में प्रति सेकंड 54 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा गया। यह सिलसिला रात 2 से अलसुबह तक चला।

रात 10 बजे से शुरू हुई कवायद-रात 10 बजे से ही लेवल मेंटेन करने का सिलसिला शुरू कर दिया गया था। इस समय 4 गेट 2 फीट तक खोले गए थे। इसके बाद 10.15 बजे गेटों की संख्या बढ़ाकर 5 की गई। फिर भी जलाशय में बाढ़ कम नहीं हुई तो 5 गेटों को 4-4 फीट तक खोल दिए गए। इस दौरान डेम से तवा नदी में प्रति सेकंड 17 हजार 200 क्यूसेक पानी छोड़ा गया।

डेढ़ बजे खोल दिए गए सतपुड़ा डैम 7 गेट-रात 1.30 बजे गेटों की संख्या बढ़ाकर 7 की गई। फिर भी लेवल मेंटेन नहीं हुआ तो गेटों की ऊंचाई बढ़ाकर 10-10 फीट कर दी गई। इसके चलते तवा नदी रात भर उफान पर रही। हालाकि तवा नदी पर शिवनपाठ और नंदियांघाट आर उच्चतकनिकी पुल निर्माण होने के चलते पुनर्वास कैंप पहुंच मार्ग अवरूद्ध नहीं हुआ। सतपुड़ा डैम के फिलहाल 5 गेट खुले हैं।

चंदोरा के 5, पारसडोह का एक गेट खुला-मुलताई सहित प्रभातपट्टन क्षेत्र में बीती रात से तेज बारिश हो रही है। लगातार हो रही बारिश के बाद पारसडोह डैम का एक गेट और चंदौरा डैम के पांच गेट खोल दिए गए हैं। इधर ताप्ती सरोवर भी जमकर ओवरफ्लो होकर बह रहा है। मुलताई क्षेत्र में रात भर से लगातार बारिश होने के चलते 23 तो पट्टन में 44 मिलीमीटर बारिश हो गई है।

वर्धा डैम के गेट अभी नहीं खुल पाए-चंदोरा डैम के पांच गेटों को डेढ़ डेढ़ मीटर खोला गया है। डैम से लगातार पानी छोड़ा जा रहा है। इरीगेशन के सब इंजीनियर एसके नागले ने बताया कि चंदौरा डैम के 5 गेट भी सीजन में पहली बार खोले गए, वहीं वर्धा डैम के गेट अभी भी नहीं खोले गए हैं। मुलताई क्षेत्र में कल दिन में बारिश नहीं हो रही थी, लेकिन शाम होते-होते अचानक बादल घिर गए और बारिश का दौर शुरू हो गया। शाम से शुरू हुई बारिश आज सुबह 7:00 तक लगातार चली है। बताया जा रहा है कि रात में तेज बारिश हुई है। किसानों का कहना है कि सोयाबीन की फसल के लिए पर्याप्त पानी हो चुका है। अब कुछ दिन के लिए धूप निकलने की आवश्यकता है।

लगातार बारिश से धराशाही हुआ कच्चा मकान, घर में सो रहे दो घायल

बैतूल। आठनेर ब्लॉक क्षेत्र के ग्राम पंचायत मानी के धारुल में अधिक बारिश के कारण एक कच्चा मकान धराशाही हो गया। इस हादसे में दो लोग घायल हो गए है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक शुक्रवार की रात को ग्राम धारुल में देवराम इवने का कच्चा मकान का एक हिस्सा धराशाही हो गया। घर में सो रहे दो लोग मकान की चपेट में आने से घायल हो गए। सूचना मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ उमड़ गई। ग्रामीणों की सहायता

से घर के भीतर दबे लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। मकान धराशाही होने की सूचना पटवारी और सचिव को दी गई। शनिवार को राजस्व अधिकारियों और सचिव दुर्गादास पाटिल ने मौके पर पहुंचकर मौके का जायजा लिया और नुकसानी को लेकर पंचनामा बनाया गया। पीड़ित परिजनों ने अधिकारियों से मुआवजा देने की मांग की है। अधिकारियों ने पीड़ित को आश्वस्त किया कि उनकी मांग वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुंचाई जाएगी।

मंदिर निर्माण के नाम पर भौंरा में रेत का जमकर अवैध खनन

बैतूल/ भौंरा। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जिले की राजनीति के आगे सारे काम बौने साबित होते जा रहे हैं। इसका उदाहरण घोड़ाडोंगरी क्षेत्र के भौंरा में आसानी से देखा जा सकता है। पिछले कई दिनों से एक जनप्रतिनिधि के पुत्र द्वारा अपने साथियों के साथ रेत का जमकर अवैध खनन किया जा रहा है। प्रशासन के अधिकारियों की आंखों के सामने यह खनन हो रहा है और सभी आंखे बंदकर तमाशा देख रहे हैं। इससे समझा जा सकता है कि जनप्रतिनिधियों खुद अपनीं आंखों के सामने अवैध खनन करवाकर मुख्यमंत्री की मंशा पर पानी फेर रहे हैं। जानकार सूत्रों ने बताया कि भौंरा मुख्यालय से गुजरने वाली नदी में पिछले कई दिनों से जमकर अवैध उत्खनन हो रहा है। यहां रात के अंधेरे में बड़े पैमाने पर पोकलेन और डंपरों के साथ ट्रैक्टर भी नदी से उतरकर सैकड़ों की संख्या में पासे के ही जगह में रेत डंप कर रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि भाजपा जनप्रतिनिधि का एक पुत्र और उसका साथी पिंटू खुद इस अवैध खनन को लीड कर रहे हैं। कुछ इलेक्ट्रानिक मीडिया में भी यह मामला सामने आया है कि जनप्रतिनिधि पुत्र आंखों के सामने अवैध उत्खनन कर रहे हैं। यह मामला पूरे जिले में सुर्खियां बटोर रहा है।

मंदिर के लिए हो रहा खनन का काम-जानकार सूत्रों ने बताया कि भौंरा के पास ही एक बड़े मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। इस निर्माण में करीब 40 लाख रुपए का खर्च जनप्रतिनिधि पुत्र और उसके साथियों द्वारा बड़े पैमाने पर रेत का अवैध खनन किया जा रहा है। सूत्र बताते हैं कि शाम ढहलने के बाद यहां पर पोकलेन मशीन और डंपरों को नदी में आसानी से उतरते देखा जा सकता है। बड़े पैमाने पर भौरा नदी के आसपास रेत के बड़े डंप भी किए हुए हैं। लोग आंखों से रेत के अवैध डंपों को देखते हैं, लेकिन किसी की मजाल नहीं कि मामले में शिकायत कर सके।

मिलीभगत से हो रहा पूरा काम-अपुष्ट सूत्रों ने बताया कि जनप्रतिनिधि के दबाव के कारण जिले के प्रशासनिक, पुलिस अधिकारी इस समय चुप्पी साधे बैठे हैं। इसी का फायदा उनका पुत्र उठाकर जमकर रेत खनन में लगे हैं। नाम न प्रकाशित करने की शर्त पर भौंरा के कुछ जागरूक नागरिकों ने बताया कि इस मामले में पहले भी शिकायत हुई थी, लेकिन प्रशासन ने ध्यान नहीं दिया। इसी वजह खनन का काम बिना रोक-टोक जारी है। लोग अब कह रहे हैं कि अवैध खनन का काम मिलीभगत से चल रहा है। लोगों को मनमाने दाम पर रेत उपलब्ध कराई जा रही है

इनका कहना

नदी से रेत खनन किए जाने की जानकारी मिली है। खनिज निरीक्षक को निरीक्षण के लिए निर्देशित किया है। मौके का निरीक्षण और जांच कर खनिज अधिनियम की धाराओं के तहत कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

- मनीष पालेवार, उप संचालक खनिज, बैतूल

स्कूल में दर्ज संख्या बढ़ाने ग्रामीणों व शिक्षकों ने संभाला मोर्चा

बैतूल। स्कूल में घटती दर्ज संख्या से चिंतित ग्रामीणों और शिक्षकों ने शाला त्यागी व अप्रवेशित छात्र-छात्राओं के घर-घर दस्तक देकर

स्कूल में दाखिले के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। ढोंडवाड़ा स्कूल में दर्ज संख्या बढ़ाने के लिए ग्रामीणों के साथ शिक्षकों ने पालकों को समझाइश देकर बच्चों को स्कूल भेजने व अधिक से अधिक बढ़ाने के लिए एक जुट होकर प्रयास कर रहें हैं। जिससे कि गांव का बच्चा गांव में ही अध्ययन कर सके। ग्राम के पटेल कृष्णराव खाड़े व शिक्षक मदनलाल डढोरे ने बताया कि आर्थिक रूप से कमजोर पालक कर्ज लेकर अन्य जगह बच्चों को भेज रहें हैं। जिससे आर्थिक कारण घर परिवार की व्यवस्था बिगड़ रही है। ग्रामीणों ने कहा कि यह समझाइश पालकों को निरंतर दी जाती रहेगी जिससे दर्ज संख्या बढ़ सके। इस अवसर पर सरपंच संगीता खाड़े, कैलाश पंवार, साहेबराव धोटे, शिक्षक मदनलाल डढोरे, लक्ष्मणराव पंडागरे, गणेश राज दवंडे, सुरेन्द्र खाड़े, पंडरी नाथ धोटे, कृष्णराव वाघमारे, भोजराज पंवार के द्वारा लगातार शाला त्यागी बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रयास किए जा रहें हैं। शाला प्रबंधन समिति ने इस प्रयास की सराहना की है।

महाराष्ट्र के जेजुरी में खंडोबा,शिव मल्हार रूप में सजे धारनाथ

धार। श्री धाराधिपति भक्त मंडल , धार द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी बाबा धारनाथ का आकर्षक श्रंगार का आयोजन किया गया। इस वर्ष भगवान शिव को सावन मास में 'महाराष्ट्र के जेजुरी में खंडोबा शिव मल्हार' भगवान शिव का अवतार माना जाता है का स्वरूप दिया गया जो कि नगर में आकर्षण का केंद्र रहा। मूर्तिकार दीपक निक्कम द्वारा बनाया गया एवम मंदिर परिसर की भव्य साजसज्जा की गई प्रसादी तथा खीर वितरण किया गया। भक्तमण्डल विगत 7 वर्षों से प्रतिवर्ष बाबा धारनाथ का आकर्षक स्वरूप में श्रंगार एवम प्रसाद वितरण का आयोजन करता आ रहा है, जिसमे श्रावण के पावन माह में भक्तगण बड़ी संख्या में दर्शन लाभ लेते हैं। आयोजन के दौरान आयोजन समिति के संदीप दवे,चंचल चौहान मनीष मकवाना , अभिषेक मिश्रा, सन्तोष जोशी, आशीष मकवाना , सोनू राठौड़,विनय चौहान,आनंद गुप्ता,शुभम सोलंकी,नीलेश अजमेरिया, विनय चौहान, संजय हिरवले, भारत रावल,भावेश, गौरव व्यास,भावेश मण्डलोई , शैलेन्द्र सिंह ठाकुर, राघवेंद्र सिंह ठाकुर जीतेन्द्र प्रजापत, आयुष नागर , नीलेश अजमेरिया, विक्की शर्मा आदि सदस्यगण मौजूद थे।

जिसका जीवन भगवत चेतना में बीत रहा वह कभी दुखी नहीं रह सकता : प्रणव दास

नर्मदापुरम। इस्कॉन मंदिर में आज कृष्ण भक्तों ने भगवान कृष्ण के प्रकटोत्सव के पहले भगवान के प्रकटोत्सव की कथा का श्रवण किया। नर्मदापुरम स्थित संस्था प्रमुख प्रणव दास प्रभु द्वारा कृष्ण भक्तों को कृष्णभावनामृत संस्था प्रमुख आचार्य प्रमुख श्रील प्रभुपाद द्वारा अनुवादित भागवतम से उद्धृत भगवान कृष्ण का प्रकटोत्सव कथा श्रवण कराते हुए प्रभु जी ने बताया कि माता देवकी की आठवीं संतान के रूप में भगवान कृष्ण प्रकट होने से पूर्व कंस देवकी के छह पुत्रों का वध कर चुका था। नारदजी द्वारा कंस को समझाने के कारण कंस ने जिन देवकी पुत्रों का वध किया था दरअसल वे ब्रम्हा जी द्वारा शापित ऋषि पुत्र थे जिनकी मुक्ति के लिए ही नारदजी ने यह मार्ग कंस के जरिए प्रस्त किया था। सातवीं संतान के रूप में देवकी के गर्भ से बलराम को भगवान ने योगमाया के जरिए रोहणी के गर्भ में संकर्षण(बलराम जी) के जरिए स्थापित करवाया फिर भगवान विष्णु वसुदेव के मन में प्रकट हुए जो की सूर्य के प्रकाश की तरह चमक उठे भगवान फिर वसुदेव के हृदय से माता देवकी के हृदय में चंद्रमा की शीतलता के समान स्थानांतरित हुए ।

लायंस क्लब देवास गोल्ड एवं सर्व श्री हरि सोसाइटी ने दी शहीदों को श्रद्धांजलि

देवास। लायंस क्लब देवास गोल्ड एवं सर्व श्री हरि सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मे पूर्व शहीदों को श्रद्धांजलि देकर छोटे बच्चों ने राष्ट्र भक्ति गीतों पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। एडमायर एकेडमी के बच्चों ने भारतीय संविधान में हमारे मूल अधिकारों पर एक लघु नाटिका भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम के आयोजन की अध्यक्षता हिना राठौर ने की अतिथियों के रूप में पूर्व सैनिकों को बुलाकर उनका सम्मान किया गया।

पौराणिक नगरी अमझेरा में आयोजित श्री कृष्ण पर्व पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने की शिरकत

धार। उज्जैन के सांदीपनी आश्रम से शिक्षा, जानापाव में भगवान परशुराम से सुदर्शन ग्रहण कर पराक्रम के महत्व को निरूपित कर अमझेरा में रुक्मी को हराकर शौर्य का प्रदर्शन करने वाले भगवान श्री कृष्ण का समूचा जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। यही कारण है कि राज्य सरकार ने इन क्षेत्रों के विकास हेतु विशेष कार्य करने का निर्णय लिया है। जन्माष्टमी के मौके पर अमझेरा में आयोजित श्री कृष्ण पर्व आयोजन को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने यह बात कही। यहां पंडित कमल किशोर नागर, केंद्रीय महिला एवं बाल विकास विभाग राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर, धार विधायक नीना वर्मा, सरदारपुर विधायक प्रताप ग्रेवाल, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा, मनोज सोमानी, पूर्व मंत्री द्वय राजवर्धन सिंह दत्तीगांव, रंजना बघेल, पूर्व सांसद छतरसिंह दरबार, पूर्व विधायक द्वय वेलसिंह भूरिया, मुकामसिंह किराड़े, जयदीप पटेल, कमल यादव उपस्थित थे।

अमझेरा की धरती शौर्य और वीरता की धरती है, राणा बख्तावर सिंह ने जो लड़ाई अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी वह अद्वितीय है....

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि सरकार ने निर्णय लिया है कि हर तीज त्यौहार हर्षोल्लास के साथ आयोजित किए जाएंगे। समाज का हर वर्ग इन्हें आनंद और उत्साह के साथ मनाए। उन्होंने कहा कि अमझेरा की धरती शौर्य और वीरता की धरती है। यहां के राणा बख्तावर सिंह जी ने जो लड़ाई अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी वह अद्वितीय है। आज हम उसको आज भी स्मरण कर रहे हैं। यहाँ एक दो नहीं 28 लोगों ने अपना जीवन बलिदान करके हमारे मस्तक को गर्व से ऊंचा किया है। जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। भगवान श्री कृष्ण को

भगवान श्री कृष्ण का संपूर्ण जीवन हमारे लिए अनुकरणीय : मोहन यादव

याद करें।उनका पूरा जीवन हमारे लिए पाथेय हैं। भगवान श्री कृष्ण ने जन्म से लेकर समूचे जीवन में विपत्तियों का सामना किया। भगवान श्री कृष्ण को माखन चोर कहने वाले प्रसंग को मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने विस्तार से बताते हुए कहा कि भगवान श्री कृष्ण की माता ने उनसे कहा था कि उनके लोगों के द्वारा बनाया गया माखन कंस के घर जाता है जो भगवान श्री कृष्ण का दुश्मन था। लिहाजा बृजवासियों का माखन कंस को नहीं जाए इसलिए वे माखन खा जाते थे और दोस्तों के साथ मटकी फोड़ देते थे। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि अमझेरा को तीर्थ नगरी के रूप में विकसित किया जायेगा। जहां-जहां भगवान श्री कृष्ण और राम जी के पदचिह्न है, सरकार उन्हें विकसित करेगी। मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने कहा कि सरकार गोपालको को बढ़ावा देगी ,10 गायों से अधिक गाय पालने वाले गो पालको को अनुदान देगी। उनसे दूध ख़रीदा जायेगा। कांजी हाउस बंद करेंगे और जगह-जगह सरकार गौशालाये खोलेंगी । गाय के दूध उत्पादन पर सरकार बोनस देगी। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि जब से उज्जैन में महाकाल लोक बना है तब से वहां पर 5 करोड लोग दर्शन करने के लिए साल में पहुंच रहे। ऐसे केंद्रों का विकास करना सरकार की मंशा है। हम अमझेरा को भी विकसित करेंगे। मुख्यमंत्री ने मटकीफोड़ कार्यक्रम में भी भाग लिया। कार्यक्रम कों संत कमलकिशोर नागर जी ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय महिला एवं बाल विकास विभाग राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर ने मांग कि की सरदारपुर और अमझेरा में खेल परिसर बनाया जाए। साथ ही यहां पर कृषि कॉलेज और इंदौर दाहोद रेलवे लाइन से अमझेरा को भी जोड़ा जाए। पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया ने स्वागत भाषण दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थित बाल गोपालों को गोद में लेकर स्नेह से दुलार किया। मटकी फोड़ का कार्यक्रम भी हुआ। उन्होंने बाल गोपालों को माखन मिश्री भी प्रसाद के रूप में खिलायी। संभागायुक्त दीपक सिंह, आईजी अनुराग, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, डीआईजी निमिष अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह मौजूद रहे।

अमझेरा के अमका झमका मंदिर में मुख्यमंत्री ने की पूजा अर्चना...

धार जिले की सरदारपुर तहसील के श्री कृष्ण भगवान से सम्बन्धित पौराणिक अमका झमका मंदिर में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव श्री कृष्ण पर्व जन्माष्टमी महोत्सव कार्यक्रम में शामिल हुए। अमका झमका मंदिर का संबंध द्वापर युग से रहा है। मंदिर परिसर में पहुंचकर मुख्यमंत्री डॉ यादव ने सर्वप्रथम द्वापर युगीन कृष्ण रुकमणि हरण स्थल के दर्शन किए, वे हरण स्थल पर स्थापित रथ पर भी बैठे। तत्पश्चात मुख्यमंत्री डॉ यादव ने

अंबिका माता मंदिर में जाकर पूजा एवं आरती की एवं प्रदेश के सुखद भविष्य की कामना की। इसके बाद उन्होंने प्रसिद्ध चामुंडा माता मंदिर में दर्शन करके पूजा अर्चना की। मंदिर प्रांगण से बाहर निकलने पर उन्हे उपस्थित जनसमूह एवं जनप्रतिनिधियों ने पौधे एवं अंबिका माता की प्रतिमा भेट की। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री डॉ यादव ने अमझेरा के प्राचीन राजराजेश्वर महादेव मंदिर में भगवान के दर्शन करते हुए हर हर महादेव के जयकारों के बीच जलाभिषेक किया। उन्होंने मंदिर परिसर की प्राकृतिक सुंदरता की प्रशंसा की।

म्यूजिकल फाउंटेन से बढ़ेगा ताप्ती सरोवर का आकर्षण, 12 लाख की लागत से बनाया गया है फव्वारा

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर पालिका द्वारा अधोसंरचना योजना के तहत 12 लाख की लागत से नगर के ताप्ती सरोवर में म्यूजिकल फाउंटेन लगाया जा रहा है। जिसका कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। शनिवार देर रात नगर पालिका के जनप्रतिनिधियों ने ताप्ती तट पर पहुंचकर फाउंटेन कार्य का निरीक्षण किया और जल्द से जल्द कार्य पूरा करने के निर्देश दिए । इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गढेकर, पार्षद भी उपस्थित थे। नगर पालिका में उप यंत्री योगेश अनेराव ने बताया कि ताप्ती सरोवर में 12 लाख रुपए की लागत से म्यूजिकल फाउंटेन लगाया जा रहा है, जिसकी शनिवार देर रात टेस्टिंग की गई। उन्होंने बताया कि विधायक की अनुशंसा पर उक्त राशि अधोसंरचना मद से मिली है। जिसके तहत फव्वारा खरीदा गया है, जिससे ताप्ती सरोवर की रौनक और बढ़ जाएगी।

ऑनलाइन ट्रांजेक्शन से मानव तस्करी रैकेट का पर्दाफाश

दूधमुंही बच्ची भिंड, तीन साल का लड़का यूपी में मिले; दो महिलाओं समेत 5 गिरफ्तार

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर पुलिस ने मानव तस्करी के अंतरराज्यीय रैकेट का पर्दाफाश किया है। खास बात यह है कि आरोपियों का सुराग एक ऑनलाइन ट्रांजेक्शन की वजह से लगा। 5 आरोपियों को गिरफ्तार कर 5 दिन पहले ग्वालियर से किडनैप हुई 20 दिन की बच्ची को भिंड जबकि तीन साल के बच्चे को उत्तर प्रदेश से ढूंढ निकाला गया। आरोपियों में दो महिलाएं, एक किन्नर और दो युवक शामिल हैं। इनमें से पूजा शर्मा पत्नी रामलखन भिंड में टिफिन सेंटर चलाती है जबकि किन्नर शालू उत्तर प्रदेश में करहल का रहने वाला है। मुख्य आरोपी सत्यनारायण जाटव, उसकी पत्नी नीलम गोस्वामी और दीपक पुत्र रमेश बाल्मीकि भिंड के रहने वाले हैं। मामले में पुलिस ने नीलम गोस्वामी (लाल साड़ी में), उसके पति और मुख्य आरोपी सत्यनारायण जाटव, उत्तर प्रदेश की शालू किन्नर समेत 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

महिला को शराब पिलाई, फिर ले गए बच्चे

19 अगस्त को मुरार थाने में सरोज वंशकार (25) ने रिपोर्ट दर्ज कराते हुए कहा, 'मैं सात नंबर चौराहे टप्पा तहसील के पास रहती हूं। मूल रूप से टीकमगढ़ जिले के जतारा की रहने वाली हूं। 2019 में संजू वंशकार से शादी हुई थी। पति गांव में रहकर मजदूरी करता है। 2021 में पति के करंट से झुलसने के बाद उसे गांव में छोड़कर ग्वालियर में अपनी बहन और जीजा के यहां आकर रहने लगी। यहां भीख मांग कर गुजारा करती हूं। 18 अगस्त को 7 नंबर चौराहे पर खड़ी थी। यहां एक महिला से मुलाकात हुई। 19 अगस्त को वो महिला घर पहुंच गई। वह मेरे 3 साल के बेटे और 20 दिन की बेटी के लिए कपड़े लेकर आई थी। कुछ देर बातचीत के बाद महिला हमें पार्टी के बहाने बड़ागांव हाइवे के पास स्थित होटल लेकर पहुंची। यहां उसका

पति भी आ गया। होटल में हम तीनों ने शराब पी। यहां से लौटकर तीनों मुरार नदी के पास मछली मंडी पहुंचे। यहां मछली फाय करवाकर खाई। इसके बाद मैं बेहोश हो गई। दंपती दोनों बच्चों को लेकर भाग गए।' मछली मंडी से मिला सुराग, ऑनलाइन पेमेंट से खुला राज जांच के दौरान 22 अगस्त को पुलिस को पता चला कि आरोपियों ने मछली मंडी में मोबाइल से ऑनलाइन ट्रांजेक्शन किया था। पुलिस उस दुकान पर पहुंची। ट्रांजेक्शन का रिकॉर्ड खंगाला। ऑनलाइन पेमेंट करने वाले की पहचान सत्यनारायण जाटव निवासी नदी पार टाल के रूप में हुई। साइबर सेल ने मोबाइल नंबर को सर्विलांस पर लिया। शनिवार को पता चला कि सत्यनारायण गोला का मंदिर चौराहा पर खड़ा है। पुलिस ने उसे तत्काल पकड़ लिया। पूछताछ में पहले तो वह बरगलाता रहा, फिर पत्नी नीलम गोस्वामी के साथ मिलकर बच्चों का अपहरण करना कबूल कर लिया।

एमपी के भिंड, यूपी के करहल में मिले बच्चे- पूछताछ में सत्यनारायण ने बताया, 'लड़के को उत्तर प्रदेश के करहल में शालू किन्नर जबकि बच्ची को भिंड के मौ में पूजा शर्मा और दीपक बाल्मीकि को दिया है।' इसके बाद पुलिस टीम करहल पहुंची। यहां से शालू किन्नर को उसके घर से पकड़ा। शालू ने पुलिस को बताया, 'सत्यनारायण और नीलम ने घर आकर बच्चा दिया है।' इसके बाद बच्ची की तलाश में पुलिस टीम भिंड के मौ में मकेटा गांव पहुंची। यहां पूजा शर्मा अपने दोस्त दीपक बाल्मीकि के साथ मिली। उनके पास से बच्ची को बरामद किया गया। ग्वालियर में अलकापुरी से नीलम गोस्वामी को भी शनिवार रात गिरफ्तार कर लिया गया।

बच्चे बेचे गए या नहीं, पूछताछ जारी

पूछताछ में पता चला कि पूजा शर्मा टिफिन सेंटर चलाती है। वह बेटी चाह रही थी। इसके लिए सत्यनारायण को दो हजार रुपए एडवांस भी दिए थे। हालांकि, बच्ची की डील कितने रुपए में की थी, यह नहीं बताया है। इसी तरह बच्चे को किन्नर के यहां छिपाने का मकसद भी पुलिस तलाश रही है। मुरार थाना प्रभारी एमएम मालवीय का कहना है कि पकड़े गए आरोपियों को रिमांड में लेकर पूछताछ की जाएगी।

मध्यप्रदेश में भारी बारिश , इंदौर-भोपाल में तेज बारिश

तवा डैम के 7 गेट खुले

● रतलाम में रेलवे ट्रैक की मिट्टी बही, 15 ट्रेन रोकीं ● 14 जिलों में रेड-ऑरेंज अलर्ट

● उज्जैन में रामघाट के मंदिर डूबे, नर्मदा, शिप्रा समेत अन्य नदियां उफान पर

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में भारी बारिश का दौर जारी है। मौसम विभाग ने रविवार को मालवा-निमाड़ के 14 जिलों में रेड और ऑरेंज अलर्ट है। भोपाल में सीजन का बारिश का कोटा पूरा हो गया है। रात में 4 इंच से ज्यादा पानी गिर गया। कई इलाकों में घरों में पानी घुस गया। भदभदा डैम के दो और कलियासोत डैम के 13 में 4 गेट खोलकर पानी छोड़ा जा रहा है। इंदौर में रुक-रुककर तेज पानी गिर रहा है। रतलाम में तेज बारिश से मंगल मऊड़ी-लिमखेड़ा स्टेशन के बीच ट्रैक के नीचे की गिट्टी और मिट्टी बह गई। शनिवार रात करीब 11 बजे इंजीनियर्स की टीम पहुंची। सुबह 5 बजे तक ट्रैक दुरुस्त कर दिया गया। इस दौरान 10 पैसेंजर समेत 15 ट्रेन अलग-अलग स्टेशनों पर रोकनी पड़ीं। इधर, नर्मदापुरम में तवा डैम के 7 गेट खोल दिए गए हैं। खंडवा के इंदिरा सागर डैम और ओंकारेश्वर डैम के गेट भी खोल दिए गए हैं।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया- लो प्रेशर एरिया रीवा संभाग के आसपास अति निम्न दाब में बदल गया है। मानसून ट्रफ खजुराहो और लो प्रेशर एरिया से होते हुए गुजर रही है। एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) भी एक्टिव है। इसके चलते प्रदेश में लगातार बारिश हो रही है।

30 अगस्त से फिर नया सिस्टम- मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 24 घंटे में प्रदेश के पश्चिमी हिस्से में सिस्टम स्ट्रॉन्ग होगा। 26 अगस्त को यह आगे बढ़ेगा। इसके बाद यह कमजोर होगा, जिससे बारिश की एक्टिविटी कम हो जाएगी। बंगाल की खाड़ी में 30 अगस्त से नया सिस्टम एक्टिव होगा। जिसके असर से एक बार फिर प्रदेश में बारिश का दौर शुरू होगा।

डैमों के गेट भी खुले- लगातार तेज बारिश होने की वजह से नर्मदा, शिप्रा समेत अन्य नदियां उफान पर आ गई हैं। वहीं, डैम और तालाबों में भी पानी आ गया। भोपाल के केरवा, कलियासोत और भदभदा डैम के गेट फिर से खुल गए। भोपाल के पास कोलार डैम में भी पानी बढ़ गया।

शनिवार को रायसेन के हलाली डैम के 3 गेट खोले गए। नर्मदापुरम के तवा डैम के 3 गेट, उमरिया के जोहिला डैम के 4 गेट भी खोल दिए गए। बाणसागर, कुंडालिया, बरगी, इंदिरा सागर, ओंकारेश्वर डैम में भी पानी की आमद जारी रही।

राजगढ़ में बाइक समेत दो लोग बहे, बड़ा हादसा टला- राजगढ़ में उफनती नदी के पुल को बाइक से पार करने के दौरान दो युवक पानी के तेज बहाव में बाइक समेत बहने लगे। जिसके बाद वहां खड़े कुछ लोगों ने युवकों को बचाने के लिए पानी मे दौड़ लगा दी और युवकों को बचाया। घटना की शनिवार शाम की है। इसका वीडियो रविवार को सामने आया।

विदिशा में बेतवा नदी के किनारे के मंदिर डूबे

विदिशा में बेतवा नदी का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। नदी के घाटों पर स्थित मंदिर डूब गए।बेतवा के चरण तीर्थ घाट पर पुराने सड़क पुल पर करीब 1 फीट पानी बह रहा है।

रायसेन में बाइक समेत नदी में बहे 3 युवक, ग्रामीणों ने बचाया

रायसेन में उफनती नदी पार कर रहे तीन युवत बाइक समेत नदी में बह गए। जिसके बाद ग्रामीणों ने अपनी जान जोखिम में डालकर उन्हें बचाया। हालांकि उनकी बाइक बह गई। घटना मुरैलकलां पाली गांव की है।

डिंडौरी में खरमेर नदी में बाढ़

डिंडौरी में खरमेर नदी में बाढ़ आ गई। वाहन चालक उफनती नदी पार कर रहे हैं। पुल पार कर रही दो गाय बह गईं। सूचना मिलने पर अमरपुर पुलिस चौकी प्रभारी अतुल हरदहा मौके पर पहुंचे और बेरिकेड्स लगाकर मार्ग बंद करवा दिया।

शिवपुरी में यात्रियों से भरी बस उफनती नदी से गुजरी

शिवपुरी के इंदर गांव में एक ड्राइवर ने उफनती नदी पर से बस गुजारी। इस दौरान बस में करीब 50 यात्री सवार थे। नदी का पानी पुल पर से काफी तेजी से बह रहा था।

धार में नदी में बहे बच्चे की तलाश, रेस्क्यू जारी- धार की चिड़ी नदी में बहे एक बच्चे की नदी में तलाश की जा रही है। घटना जिले के मनावर के गोगावां महापुरा गांव की है। यहां शनिवार रात चिड़ी नदी पर बनी पुलिया पार करते समय 4 बच्चे बाइक समेत बह गए। तीन को बचा लिया गया था। वहीं एक बालक की तलाश की जा रही है।

कूनो नेशनल पार्क

चीते 1 साल बाद बाड़े से आजाद होंगे, मानसून के बाद छोड़े जा सकते हैं

ग्वालियर/श्योपुर (नप्र)। कूनो में लाए गए अफ्रीकी चीते फिर से खुले जंगल में घूम सकेंगे। इससे पहले इनकी स्वास्थ्य जांच होगी। मानसून के बाद इन्हें खुले में छोड़ा जा सकता है। अभी यहां 25 चीते हैं। इनमें 13 वयस्क और 12 शावक हैं। चीता पवन पहले से ही खुले जंगल में है। कूनो में चीतों की लगातार मौत के बाद इन्हें बाड़े में बंद कर दिया गया था। करीब एक साल तक स्वास्थ्य की जांच की गई।

साथ ही सुरक्षा टीका व अन्य दवाएं दी गईं। कूनो नेशनल पार्क के सीसीएफ उत्तम कुमार शर्मा के अनुसार, चीतों को बारिश के बाद जंगल में छोड़ा जाएगा। एक अधिकारी ने कहा कि वयस्क चीतों को बारिश खत्म होने के बाद चरणों में जंगल में छोड़ा जाएगा, जबकि शावकों और उनकी माताओं को दिसंबर के बाद छोड़ा जाएगा। बता दें कि कूनो में 17 शावक पैदा हुए, इनमें से 12 जीवित हैं।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

अमित शाह की बैठक पर निगाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की बैठक पर सबकी निगाहें टिकी हुई है। अमित शाह अपनी तीन दिवसीय यात्रा में सरकारी कामकाज के साथ पार्टी के नेताओं की बैठक लेंगे। राज्य में भाजपा की सरकार बनने के बाद अमित शाह का छत्तीसगढ़ में दो दिन नाइट स्टे ने कइयों के कान खड़े कर दिए हैं। छत्तीसगढ़ में मंत्री के दो पद खाली हैं और निकट भविष्य में एक उपचुनाव भी होना है, फिर नेताओं को पद बांटने का भी हल्ला चल रहा है। इस कारण अमित शाह की यात्रा से कई लोगों की आस जगी है। कहते है अमित शाह इंटरस्टेट समन्वय की बैठक और नक्सल समस्या की समीक्षा के साथ विष्णुदेव साय सरकार के कामकाज की भी समीक्षा करने वाले हैं। राज्य में साय सरकार को करीब आठ महीने हो गए हैं। सरकार के कामकाज की समीक्षा की खबर से अमित शाह के आने के एक दिन पहले तक राज्य के मंत्रियों और अफसरों में भागमभाग मची थी। खबर है कि गृह विभाग सबसे ज्यादा तैयारियों में जुटा रहा। अब राजनीतिक और प्रशासनिक दोनों ही क्षेत्र में अमित शाह की बैठक के नतीजे का इंतजार है।

भाजपा के दो विधायकों में टकराहट- कहते हैं एक सप्लायर को लेकर भाजपा के दो विधायकों में टकराहट की नौबत आ गई है। खबर है कि एक विधायक सप्लायर के हितैषी हैं, वहीं दूसरे को सप्लायर फूटी आँख नहीं सुहाते। सप्लायर भी बड़े चर्चित हैं और बताते हैं एक संस्था में सप्लायर का ही बोलबाला है। सप्लायर के कारण एक दूसरे के खिलाफ भौहें ताने विधायक डॉ. रमनसिंह की सरकार के वक्त प्रतिष्ठित पदों पर रह चुके हैं। दोनों ही वरिष्ठ विधायक हैं और एक बिलासपुर संभाग से विधायक हैं तो दूसरे रायपुर संभाग से। भले ही दोनों विधायक अलग-अलग संभाग से आते हैं, पर दोनों एक ही वर्ग के हैं।

जीपी की बड़ी जीत- लगता है कांग्रेस राज में मुसीबतों के पहाड़ से दो-चार हाथ करने वाले आईपीएस जीपी सिंह के अच्छे दिन आने वाले हैं। 1994 बैच के आईपीएस जीपी सिंह को जबरिया सेवानिवृति के खिलाफ कैट के बाद दिल्ली हाईकोर्ट से भी न्याय मिल गया है। अब दिल्ली हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ भारत सरकार सुप्रीम कोर्ट जाती है या नहीं। इस पर सारा दारोमदार टिका है। कैट के फैसले के विरोध में भारत सरकार ही दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। याचिका को दिल्ली हाईकोर्ट ने सुनवाई के बाद 23 अगस्त को खारिज कर दिया। अब केंद्र सरकार सुप्रीम कोर्ट में अपील नहीं करती है तो जीपी सिंह की बहाली हो जाएगी। जीपी सिंह के मामले में राज्य सरकार चुप नजर आ रही है। वह केंद्र सरकार के रुख के इंतजार में है।

छत्तीसगढ़ के कांग्रेस नेता की ख्वाहिश- कहते हैं छत्तीसगढ़ के एक बड़े कांग्रेस नेता पार्टी की राष्ट्रीय टीम में शामिल होकर कर्नाटक जैसे राज्य का प्रभारी बनना चाहते हैं। कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है। कहा जा रहा है कि राहुल गाँधी की हरी झंडी के बाद छत्तीसगढ़ के कांग्रेस नेता को राष्ट्रीय टीम में महासचिव के रूप में शामिल कर लिया जाएगा। इसके लिए लगभग सहमति बन चुकी है, लेकिन कर्नाटक का प्रभारी महासचिव बनाए जाने के आसार कम है। जानकार लोगों का कहना है कि बिहार, उत्तरप्रदेश जैसे हिंदी भाषी राज्यों या पड़ोसी ओड़िशा का प्रभारी महासचिव बनाए जाने की उम्मीद है। ये नेता पहले भी बिहार और उत्तरप्रदेश में काम कर चुके हैं।

देवेंद्र यादव का क्या होगा ?

राजनीति में जेल जाना कोई नई बात नहीं है, पर देवेंद्र यादव जिस आरोप में जेल गए हैं, फिलहाल तो उनके लिए राह बहुत कठिन है। देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी के खिलाफ पूरी कांग्रेस पार्टी आंदोलन पर उतर आई है। देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी से कांग्रेस को सरकार के खिलाफ एक मुद्दा भी मिल गया है। कांग्रेस देवेंद्र की गिरफ्तारी को राजनीतिक रंग में रंग दी है। बलौदाबाजार कांड में अभी तक किसी भी आरोपी को जमानत नहीं मिली है, इस कारण देवेंद्र यादव को जल्दी जमानत मिलने के आसार दिखाई नहीं दे रहे हैं। गिरफ्तारी से देवेंद्र यादव संकट में हैं, पर पार्टी में उनका कद बढ़ गया है। प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट उनसे मिलने जेल गए। रिहाई के बाद देवेंद्र यादव नई भूमिका में दिख सकते हैं।

नगरीय प्रशासन विभाग में थोक तबादले चर्चा में- राज्य में सरकारी अफसरों और कर्मचारियों के तबादलों पर प्रतिबंध है, ऐसे में नगरीय प्रशासन विभाग में 166 कर्मचारियों के तबादले चर्चा का विषय बन गया है। तबादला लिस्ट में अफसर से लेकर सफाई कामगार तक का नाम है। इस कारण प्रतिबंध की अवधि में अफसर से कर्मचारी के तबादले को लेकर कानाफूसी हो रही है। खबर है कि तबादलों को लेकर कुछ लोगों ने मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री से मिलकर शिकायत भी की है। अब देखते हैं क्या होता है।

निशाने पर महापौर- जाति प्रमाण पत्र के चलते एक तरफ कोरबा के महापौर राजकिशोर प्रसाद निशाने पर हैं तो दूसरी तरफ रायपुर के महापौर ऐजाज ढेबर मेट्रो ट्रेन के लिए मास्को में एमओयू करने को लेकर निशाने पर हैं। दोनों कांग्रेसी महापौर हैं। उच्च स्तरीय छानबीन समिति ने राजकिशोर के ओबीसी सर्टिफिकेट को अमान्य कर दिया तो अब उन पर तलवार लटक गई है। अब रायपुर में ठीक से सिटी बसें नहीं चल पा रही हैं और कांग्रेस के राज में स्काईवाक पर फैसला नहीं हो सका, तो फिर मेट्रो का ख्वाब दूर की कौड़ी लगती है। फिर महापौर ऐजाज ढेबर बिना अफसरों के रूस में कैसे मेट्रो के लिए एमओयू कर आए, इस पर भी सवाल उठ रहा है। कहते हैं ऐजाज ढेबर अभी तो उपमुख्यमंत्री अरुण साव और विधायक राजेश मूणत के निशाने पर हैं। आने वाले दिनों में भाजपा पार्षदों के टारगेट में भी आ सकते हैं।

मंत्री और अफसर में गोलबंदी- कहते हैं इन दिनों एक मंत्री और एक अफसर में गोलबंदी हो गई है। अफसर मंत्री के विभाग के ही है। मंत्री का अफसर को मौन समर्थन है। इस समर्थन के कारण अफसर अपने वरिष्ठों को भी आँख दिखाने लगे हैं और विभाग में कलह शुरू हो गई है। खबर है कि अफसर जिस संस्था के प्रमुख हैं, उस संस्था के माध्यम से विभाग को भारत सरकार से सालाना तीन हजार करोड़ तक मदद मिलती है। इस राशि से ही विभाग में तरह-तरह की खरीदी होती है। चर्चा है कि अफसर ने विभाग की दूसरी संस्थाओं को करीब एक हजार करोड़ बांटकर दो हजार करोड़ अपनी संस्था में रख लिए हैं, ऐसे में विभाग की दूसरी संस्थाएं,जो धनराशि के लिए उन पर निर्भर रहती हैं,पंगु हो गई है। अब ये अफसर कह रहे हैं कि खरीदी उनकी संस्था के माध्यम से होगी। खरीदी की लड़ाई में जनता से सीधे जुड़े विभाग में घमासान मचा है,पर मंत्री जी मौन हैं।

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

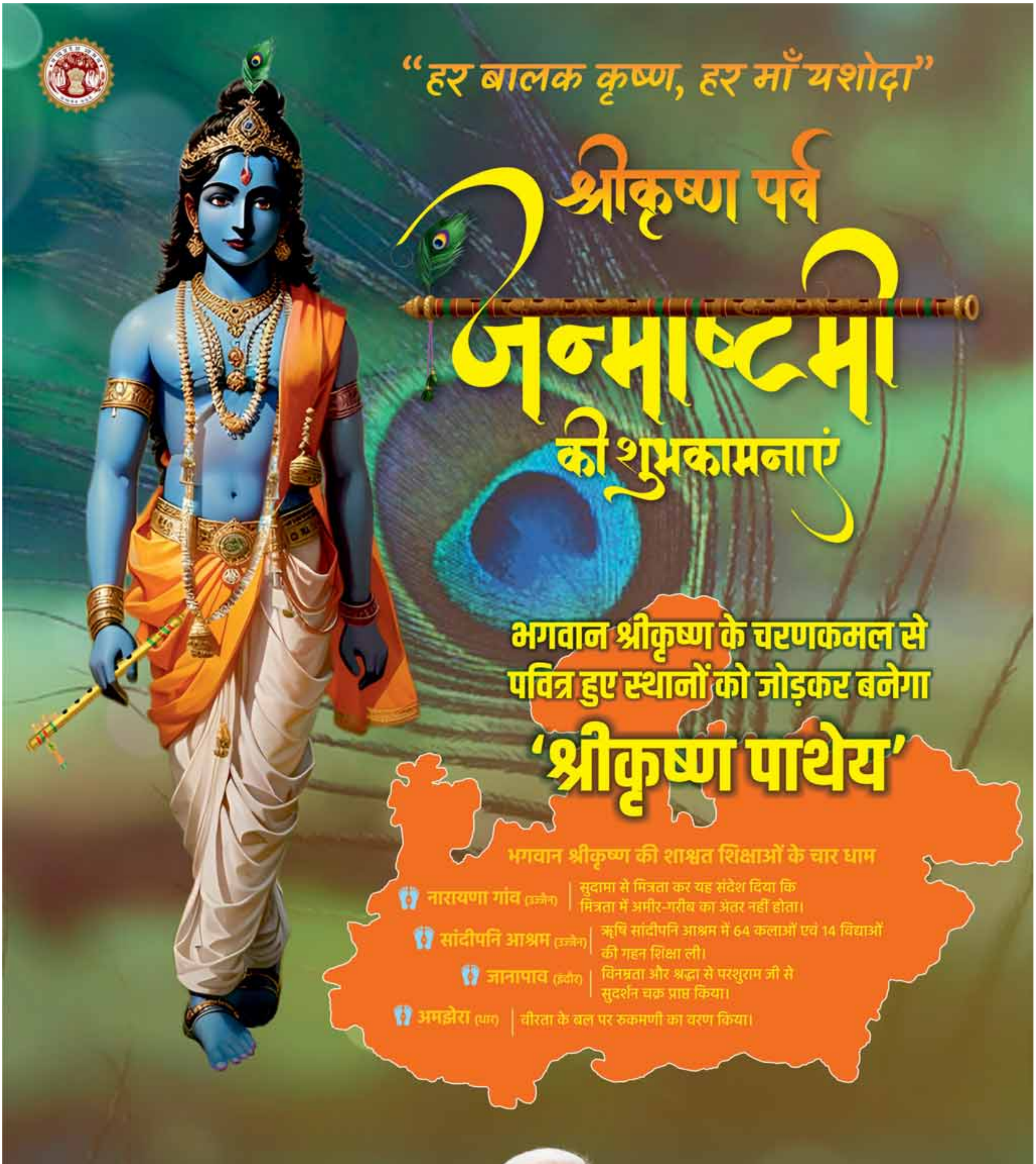
"हर बालक कृष्ण, हर माँ यशोदा"
श्रीकृष्ण पर्व
जन्माष्टमी
की शुभकामनाएं
भगवान श्रीकृष्ण के चरणकमल से
पवित्र हुए स्थानों को जोड़कर बनेगा
'श्रीकृष्ण पाथेय'
भगवान श्रीकृष्ण की शाश्वत शिक्षाओं के चार धाम
नारायणा गांव (उज्जैन) | सुदामा से मित्रता कर यह संदेश दिया कि मित्रता में अमीर-गरीब का अंतर नहीं होता।
सांदीपनि आश्रम (उज्जैन) | ऋषि सांदीपनि आश्रम में 64 कलाओं एवं 14 विद्याओं की गहन शिक्षा ली।
जानापाव (इन्दौर) | विनम्रता और श्रद्धा से परशुराम जी से सुदर्शन चक्र प्राप्त किया।
अमझेरा (धार) | वीरता के बल पर रुकमणी का वरण किया।
सांस्कृतिक परंपराओं को
समृद्धि एवं धार्मिक पर्यटन
को नये आयाम देता
मध्यप्रदेश
D11053/24
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से जुड़ने के लिए स्कैन करें।
Webcast.gov.in/mp/cmevents
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP
JansamparkMP
मध्यप्रदेश शासन